

# लौंगिया भिरचाड्

(मैथिली नाटक)



लल्लन प्रसाद ठाकुर



भवानी प्रकाशन  
पटना

तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य-लेखन प्रतियोगिता  
मे प्रथम स्थान प्राप्त

# लौंगिया मिरचाइ

( मैथिली नाटक )

लेखक

ललन प्रसाद ठाकुर



अवानी प्रकाशन

पटना, दरभंगा

## “लौगिया मिरचाइ”

प्रथम मंचन : भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना

१० अप्रील १९८६

दोसर मंचन : रवीन्द्र भवन, जमशेदपुर

३० जनवरी १९८७

पुरुष पात्र प्रथम/दोसर मंचनक कलाकारगण

१ घुटर — लल्लन प्रसाद ठाकुर

२ दिवाकर — चन्द्रकान्त

३ फुकना — रूप नारायण झा

४ मास्टर — देवचन्द्र झा/मोहन झा

५ नरेंद्र — मोहन झा/पूर्णनन्द झा

६ नेना — कुमार भास्कर/अमितेश कुमार

७ प्री० चन्द्रकान्त — रतीश चन्द्र मिश्र

स्त्री पात्र

१ स्त्री — कुमारी अनमना/कुमारी मधु झा

२ रीता — कुमारी अनीता मिश्रा

३ रसियर्मा — कुमारी रश्मी रेखा/कुमारी नमिता

निर्देशक — लल्लन प्रसाद ठाकुर

सह निर्देशक — रतीश चन्द्र मिश्र

मंच व्यवस्था — (श्रीमती) कुसुम ठाकुर

प्रकाश संयोजन — पूर्णनन्द झा/जी विद्वनाथ

संगीत — ‘श्री राजा’

## पहिल दृश्य

(स्थल पोखरि क मोड़)

(घूटर दाघु शोखरि सँ स्नान बेने खूब जोर-जोर सँ दुर्गा पाठ करत भलल आवि रहल छथि । कारक होनक स्वर सुनि बो कि पढ़त छथि ।)

घूटर — अय... इ कार सँ के आवि रहल अछि ? आइ-काल्हि एहि गामक तऽ भाये बदलि गेल छैक । रोज़ क्योने क्यो कार कि जीप सँ अजित रहैत अछि... 'आ' इ मास्टर अछि जे नाक पर माछी नहि दस दैत छै (जोर सँ चिकड़ि कऽ) ओजी... गादी ओतहि छोड़ि दियो... 'आ' रस्ता नहि छै... 'है'... 'है' ओतहि कात मे लगा दियो... । (पुनः जोर-जोर सँ दुर्गा पाठ करऽ लगैत छथि । दोसर दिस सँ दिवाकर बाबूक एक हाथ मे लीक केत नेने प्रवेश ।)

दिवाकर — नमस्कार पंडित जी ।

घूटर — नमस्कार । कहुल जाओ... ककरा ओतऽ जेबाक अछि ? रघुनन्दन मास्टरक ओतऽ की ?

दिवाकर — जी... हम... घू... (मोन पारऽ चाहैत छथि... फेर जेब सँ एकटा चिट्ठी निकालि ओहि पर लिखल नाम पढ़ैत छथि)

घू... 'टर'... 'टर' बाबू ओतऽ जाय चाहैत छी ।

घूटर — दुर्गा... दुर्गा... ओजी... एहि गाम मे इ घू आ टर मानै कि घूटर तऽ मात हमहीं छी...

दिवाकर — ओह... बिन्हि माहि सकलौ... नमस्कार... नमस्कार...

घूटर — ओजी ई नमस्कार नमस्कार तऽ कंक बंर भऽ गेल परन्च, हम तऽ अपने के बिन्हल नहि ?

दिवाकर — जी पहिल बेर जे भेट भऽ रहल अछि... दरअसल हम अपनेक सार...

घूटर — दुर्गा... दुर्गा... ओजी अपने हमर सार कोना ? हमर तऽ मात एकटा सार छथि... 'क'... 'न'... 'स' मानै कि पढ़त ताबू... 'अररिया' मे पी छलु डी अफिस मे बाड़ा बाबू छथि... खूब पाइ कमाइत छथि...

याम मे कोठापिटने छथि "बेटीक बियाह मे पचास हजार टाका मनसनि  
अछि। ओओ दू मास पहिने तऽ भेट भेल छल" तऽ कहैत छलाह हम  
तऽ मास ईमानदारीक पाइ घुस मे लैत छी। आ कहैत छलाह जे हुन-  
कर जे साहेब छथिन" कोनदत एम्पीयर तऽ कहलनि

बिवाकर—जी एक्जक्युटिभ इन्जिनियर

घुटर —हं—हं—वैह" हुनका दऽ तऽ कहैत छलाह जे एक नम्बरक घुसाह छथि।  
रिक्तेदार समक खून बऽस लैत छथि। सरकारी सिमटी लोहा सब  
बेच कऽ छा जाइत छथि।

बिवाकर—जी ? फुदन बाजू ई सम कहैत छलाह ?

घुटर —हं यो ई सम तऽ वैह कहैत छलाह। हम की जानऽ गेलिये ओजी।  
आहिरेबा हमई कतऽ भसिया गेल रही "ओओ हम पुछैत रही जे अपने  
"सार"

बिवाकर—ओ अपने तऽ हमर पूरा गप सुनिये नहि कैल" खैर इ पल पड़ल जाओ  
(चिट्ठी बँत छथि)

घुटर —ओओ हमरा लगम मे कि चरमा अछि जे चिट्ठी पढ़ल। अपनहि पढ़ि कऽ  
सुगाड़ "दुर्गा" "दुर्गा"

बिवाकर—ओ बेश। (चिट्ठी पढ़ैत छथि) प्रिय घुटर बाबू, नमस्कार।

घुटर —नमस्कार...नमस्कार

बिवाकर—ओ ?

घुटर —आगू पड़ल जाओ।

बिवाकर—ओ "। पलवाहक हमर एक्जक्युटिभ इन्जिनियर साहेब ओ बिवाकर  
बाबू छथि।

घुटर —ओ ! अपने बिवाकर बाबू "दुर्गा" "दुर्गा" ओ हम चिन्हि नहि सकलौ  
मनाय-मनाय बजा गेल।

बिवाकर—कोनो बात नहि। आगू सुनल जाओ (पुनः बल पढ़ैत छथि) दिनकर  
समयवता चलमनसाहलक कोनो दोसर छाहरण नहि भऽ सकैत अछि।  
साहेब अपन बेटीक लेल मास्टर साहेबक भाई नरेश्वर पर कया लऽ कऽ  
जा रहल छथि। नरेश्वर इनकम टैक्स आफिसर भऽ रहल छथि। हुनको

लेल अछि सँ बढ़ियाँ आओर कोनो कया नहि भऽ सकैत छनि। हमर  
साहेबक बेटी रीता परम सुबोला, गृह कार्य मे बल एवं बी० ए० पास  
छथि। कम्प्याक लेल हम ग्रेन्टी लैत छी। बाधा अछि अपने ई कार्य  
सम्पन्न कराय पुण्यक भागी बनब। हमर साहेब लग पाइक कोनो  
कमी नहि। कार्य भऽ गेला पर साहेब अहिके उचित कमिशन देता।

अहिके;

फुदन

घुटर —हैं हैं की कहू हमर जे ई एक मास सार छथि से एक नम्बरक पाबी।  
कमीशन देताह "हं"...

बिवाकर—घुटर बाबू एहि लेल तामस जुनि कैल जाय।

घुटर —ओओ ई सार तऽ एही लिख सकैत छलाह जे कार्य भऽ गेला पर तत्तम  
स्वाभाव सत्कार करतह "...

बिवाकर—सैह वृत्तल जाय" उचित स्वागत सत्कारे वृत्तल जाय (जेब सँ हु सय  
टाका बहार कऽ ईत) ताछरि ई राखल जाओ।

घुटर —(टाका लैत) दुर्गा" "दुर्गा" या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी कृपेण संस्पर्षता  
ममस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः। अथ तऽ दुर्गाक आशीर्वाद  
भऽ गेल अछि आब तऽ अपनेक लेल किछु ने किछु करऽ पड़त"

बिवाकर—ओ किछु नहि" कार्य अवश्य भऽ जाय सैह कैल जाओ।

घुटर —ओओ "हं" मास्टर घाघ अछि "कतेको लोक आबि कऽ बसि गेल"  
केकरो रहि सुनलनि। मुख्यमंत्रीक आदमी सेहो हुनकर शरीजीक लेल  
जायल छलनि"

बिवाकर—ओह ! सुनैत छी जे मास्टर साहेब एकोटा पाइ नहि लेखिन भाईक  
बिवाह मे।

घुटर —ओ कहैत तऽ सैह छैक सम के"। परन्तु हमने चिन्हैत छियै ओकरा।  
बहुता भितर घुइयाँ अछि ई मास्टर" "खैर बचि कऽ जैत कतऽ दुर्गा  
दुर्गा" लक्ष्मी बिवाकर बाबू अपने कतेक टाका तक गनि सकैत छियै।

बिवाकर—ओ पाइक कोनो चिन्ता नहि" काज जेना हैत तेना कैल जैत कथुक  
कमी नहि रहतनि।

घुटर —अब "तथापि कतेक तक"?

दिवाकर—डेड़-हू लाख कौम लः लौय...तकरा बाह तऽ बिवाई मे आधुनिक सभ  
समाज मोस्ट माइन एण्ड मोस्ट सफिस्टीके टेड...

घूटर—डेड़ हू लाख । दुर्गा दुर्गा ओओ दिवाकर बाजू एकटा बास पूछू अबलाह  
तऽ नै मानव ?

दिवाकर—पूछू—पूछू

घूटर—अपनेक विषय मे हमर सार जे कहने छलाह से तऽ सत्ते नुसाइत अछि...

दिवाकर—जी...बहिन चलैत छै । अपने ध्यान कायें दिस लगायल जाओ ।  
लाख-हूलाख चिन्ता छुनि करू...

घूटर—दुर्गा...दुर्गा हे माँ दुर्गा...बहि जनम मे तऽ जरताहा कएार देलह  
अगिला जनम मे हमरो पी० डब्लू डी० क इनजियर बना दिहऽ...

दिवाकर—हैं हैं अपने तऽ अद्भुत लोक छो यौ घूटर बाबू...

घूटर—अद्भुत लोक की ? ओओ अपनेक गन सुनि कऽ हमर तऽ ह्वासे उड़ि  
गेल अछि...अँयसो एकटा गप हमरा नहि बूझायल ? अपने एतेक टाका  
गन सकैत छी...खर्च कऽ सकैत छी...सखन फेर एहन दरिद्र छिम्मरि  
बर अपना बेटी नैल सकैत छी ? ओओ मास्टर हून् भाईक माथ पर दस  
कट्टा सँ बेटी जमीन नहि...एकटा छोटछोन टाटक घर । जाहि मे  
अपनेक बैसबोक स्नान नहि तऽ ओहि मे अपनेक बेटी कोना रहसिह ?  
मास्टर जी ! ओकर घरवासी कोना कोना अपन पेट काटि कऽ नरेश के  
पक्षीक अछि से पूरा नाम जनैत अछि । ओ एतेक टाका मे तऽ अपने  
कोनो अधीनदारक बेटी...

दिवाकर—अपने ज्ञानी ओ घूटर बाबू...। ट्रेनिंग खतम भेलपर नरेश भऽ  
जेन ह इन्काम टैक्स आफिसर...आ तीन चारि बरखक बाद ओ हमरा  
सन-उन कँकटा इन्जीनियर के कीन कऽ अपनपाकेट मे राखि सकैत  
छथि...

घूटर—तेहेन साहेब भऽ गेल अछि नरेश ?

दिवाकर—जी...

घूटर—तँ ते, एतेक लोक मारि कऽ रहल अछि परम्प एकटा बास...लाख-हू-  
लाखक गप बिसरियोहऽ दोसरा सऽ नहि बाजब । हे, हम माल ४०-५०

हजारमे ई काब कराबै...लाख-हू-लाख सुनिताहि मास्टर तऽ पागल  
भऽ जैत ।

(फूकना छिट्टा आ हिसू नेने प्रवेश)

फूकना—घोर लगे छी तोमिया मिरबाई पंडित । बलु के पागल भऽ जैत ?

घूटर—हे रे फूकना तो मुँह सम्हारि कऽ बाजल कर, नहि तऽ कोनो दिन टाँग  
हाथ तोड़ि कऽ घऽ देबी...

फूकना—गलती भऽ गेलै माकी दऽ दिप, बलु ई मोटरपाड़ी बना पाहुन कऽ सँ  
एलाह अछि ?

घूटर—कतौ सँ एलाह अछि ताहि सँ तोरा की ? जो अपन काज कऽर  
(फूकनाक मुँह बिचकावैत प्रस्थान) हैं हैं हैं ई सभ अपने जन-नमिहार  
कीक ।

दिवाकर—ते तऽ हम बूझि गेल । परम्प, ई तऽ अपने के अद्भुत संबोधन देलक  
"तोमिया मिरबाई पंडित" ।

घूटर—जी...जी...दर असल हमरा बाड़ीमे सवेक मे तोमिया मिरबाई फईत  
अछि जे गामक सभ तोड़ि-तोड़ि कऽ लऽ जाइत अछि । हैं...हैं...हैं...  
मिरबाईये छँक, ककरा रोकबै, सऽ जो जतेक लऽ जेबै, कड़ू तऽ तोरे  
लगली...हैं...हैं...हैं...खेर आब चलत जाओ पूजा पाठ कऽ लेत छी  
तएन मास्टरक मोस्ट कसूर जेत...बलल जाओ—घबराऊ छुनि...  
घूटर अपनेक संग छथि माने दुर्गा अपनेक संग छथि । अपनेक काज  
हेबै करत ।

दिवाकर—दुर्गा संग छथि कि तोमिया मिरबाई ?

घूटर—हैं...हैं...हैं...अपने तऽ हमर सारे जकाँ ससलरी कऽ लगली, हैं...  
हैं...हैं...चलल जाओ ।

( हलुक प्रस्थान । प्रकाश गन )

## दोसर दुइय

(मास्टरक घरक बलान । एकटा फूसक घर । एकटा टुटल कुर्सी आ एकटा छाट । मास्टर प्रवेश करैत छथि । आबि वऽ शोड़ा कुर्सी पर बँसैत छथि आ कुर्सी पर बैसि रहैत छथि)

मास्टर—फुकना... फुकना ...

मास्टरक स्त्री—(प्रवेश) फुकना तऽ भारे जे घास काटऽ गेल से कहीं आयल अछि ।

मास्टर—इहो फुकना हई अछि । एकर बेटा के हम पढ़ा की बँस छियै ई तऽ भरि दिन हमरे समक काज करैत रहैत अछि । एकर घर कोना चलेत छै से नहि जानि ।

स्त्री—सँह तऽ... कतेक इच्छा छै एकरा जे बेटा पढ़ि-लिख कऽ पैघ मादमी बनई । गेना तऽ छोड़ि बड़ लेज ...

मास्टर—उाहिमे कोन सखेह... एहन संस्कारी बच्चा तऽ बहुत कम देखबामे अबैत अछि । हे... एकटा बात गिरह बाकिह कऽ राखि लिय जे जे भगवलीक कृपा रहलनि तऽ ई छोड़ा हमर नाम रोशन करत । नरेन्द्र जे नहि कऽ सकलाह से करत ई छोड़ा ।... कोनो चिट्ठी ठिट्ठी ?

स्त्री—नहि कहीं आयल अछि ।

मास्टर—नरेन्द्र के चिट्ठी लिखना तऽ कतेक दिन भऽ गेल । जबाब किएक नहि दऽ रहल छथि... कव्यामत सब तंग कऽकऽ छोड़ि देने अछि । लाख कहैत छियै जे हम पाइ बाकिह लेब से कयो लेल मानत वयो... लगीत अछि जेना जबईस्ती जेवमे ठूसि देव, पचास हजार, साठि हजार... लाख... दू लाख ...

स्त्री—तऽ, नहि जानि कतयें एतेक पाइ बाबि गेल छै लोक सभके ? तँयो तऽ सभ दिव हाहाकार-मचल अछि । दहेजसँ लोक तबाह अछि ।

मास्टर—यै तबाह अछि मिथन सभ... तबाह अछि इमानदारीक पाइ खाद्यबला सभ । जो किएक तबाह रहल जकरा भूषक पाइ अकरास भेटैत छैक... जो किएक तबाह रहल जकरा ठिकेदारी मे कि व्यापार मे दू नम्वरक

पाइक लेर लागत रहैत छैक ? अहि देशमे एकटा एहन बगं तैपार भऽ गेल अछि जकरा लग दू नम्वरक पाइक कोनो हिसाब नहि आ वँह सभ ई दहेज के एतेक बढ़ा चढ़ा देखक... । जहाँ कोनो नीक लड़का निकलल कि बोली लागऽ लगीत अछि... लाख दू लाख नहि जानि आबोर कतेक । जोकरा सभक सोझा मे ई गरीबहा सभ कऽ सकत । कलेही ओकर बेटी कतबो सुनरि किएक नहि हो, कतबो पढ़ल-लिखल, शूणल किएक नहि हो । जनैत छी आइ जे हम जिनैअर कऽ दिवै जे नरेन्द्रक विवाहमे हमरा पाइ चाही तऽ डेढ़-दू लाख तक ई बला सभक छाड़ि लामि जायत...

स्त्री—दूर... एहनो वयो काज करय ।

मास्टर—अरे हम तऽ एकटा गप कहल । हम तऽ बिबाहमे लेन-देनक धोर बिरौधी छी ।... नरेन्द्रक चिट्ठी आबि आइत तऽ कोनो नीक ठाम बिबाह स्थिर कऽ दिवैनि । मात्र एकटा इच्छा अछि जे बिबाह कोनो पैघ आकिसरक बोस होनि ।

स्त्री—हे... हम तऽ कहब जे अहाँ इहो पागवान छोड़ि दिय । कोनो गरीब घरक बेटी ताकि कऽ बीजाक बिबाह कऽ दियोनि ।

मास्टर—जसदे बूझबै ततबे मे बाजब... यै, बिबाहदान मे स्टेटस देखल जाइत छैक । नरेन्द्र पैघ अकसर छथि तऽ हुनकर स्त्री पढ़ल-लिखल, तीर-तरीका बाली, सभा-सोसाइटी मे नरेन्द्रक संग देवदाली होयबाक बाही । ओ कि हमरा जेका मास्टर छथि जे कोनो मास्टरक बेटी सँ ठीक कऽ दियनि ।

स्त्री—हमर बाबूजी मास्टर नै हेंद मास्टर छथि ।

मास्टर—ओपको—अरे कहिया ओ नोकरी पकड़ने हेवा तहिना तऽ मास्टर नै रहल हेवा कि सोझे हेबमास्टर भऽ गेल छलाह ?

स्त्री—से तऽ हमरा नहि बूझत अछि ।

मास्टर—अहाँ बकलैत छी... जाइ एक रुप चाह बनाकऽ नने आउ ...

स्त्री—हँ-हँ... हम तऽ बकलैत छी । बीया तऽ अहाँक मे भाई अछि । तँ सभ अछि कार अहीके...

मास्टर—आ-हा-हा, अहाँ तऽ खितिया गेलहुँ। नरेन्द्र के आदर के सम्मान अहाँके देत छथि ओ तऽ... हमरा तऽ मात्र पंच भाई बुझैत छथि परन्तु अहाँके तऽ सद्विचन माय समान पूजा करैत छथि। अहाँ जतऽ कहवै तही होतैन नरेन्द्रक बिबाह। हम तऽ मात्र नरक स्टेटसक हिसाबे..."

स्त्री—हम की बुझवै ई सब बात। अहाँ सोचि बिचारि कऽ तय करब। हम चाहि नेने जबैत छी (प्रस्थान)

(गेना स्वासक प्रवेश)

गेना—(बिट्ठी बैठ) मास्टर साहेब प्रणाम। पोस्टमैन साहेब ई बिट्ठी देलनि अछि।

मास्टर—(बिट्ठी ला-ला हँ ई तऽ नरक बिट्ठी अछि (फाड़ैत) गेमा, तौ कने अपन बाबू के बजौने तऽ ओ..."

गेना—ओ... (प्रस्थान)

मास्टर—(बिट्ठी पढ़ैत) यै सुनैत छी... अरे जल्दी आउ

(स्त्रीक प्रवेश)

अरे नरेन्द्रक बिट्ठी आवि गेल, जनीत छी की लिखने छथि...? लिखलनि अछि अहि मासक अंत धरि हमर पोस्टिंग भऽ जेत। आव हमर बिबाह निश्चित कऽ सकीत छी। भाई अहाँ तऽ पित्त तुरुष लो आ भोगी तऽ मायो सँ बढ़ि कऽ। अहाँ लोकनि हमर बिबाहक खेल हमरा सँ पछी से उचित नहि। जतऽ उचित नूखी, रुझिया उचित नूखी निपचित कऽ दिय। देखू अहाँक बीआ फलेक आनाकारी छथि।

स्त्री—से अहाँ ने देखू। तौ जूझ सोचि-बिचारि कऽ बिबाह ठीक करियौन। जाहि से नीक जका जिनगी बोल जाइत...

मास्टर—हँ से तऽ ठीके कहैत छी... अहि पत्रके पढ़लाक बाद तऽ जिम्मेदारीक बोझ आओर बढ़ि गेल अछि। खैर, बाबा बैद्यनाथ सम नीके कराताह..."

(नेपथ्य सँ घूटरक स्वर)

घूटर—दुर्गा... दुर्गा... ई बाबा बैद्यनाथ के किएक तंग कऽ रहल छहुन हो मास्टर?

मास्टर—घूटर भाई आवि रहल छथि (स्त्रीसँ) अहाँ आइत आउ। (स्त्रीक प्रस्थान) आउ-आउ घूटर भाई...

(घूटर आ बिचारक बाबूक प्रवेश। बिचारक बाबूक संगमे श्रीक-मेरा छथि। ओ मास्टर साहेब के नमस्कार करैत छथि।)

मास्टर—नमस्कार नमस्कार... एतऽ बैसल जाओ। (आ अपने छाट पर घूटरक संग बैसि जाइत छथि)

घूटर भाई हिनका बिगुलियैन नजि?

घूटर—हो, आइ काहिल तौ ककरो बिगुल छहक। हमरा बिगुल छह कि नजि?

मास्टर—कहू तऽ भला... अहाँ तऽ..."

घूटर—तऽ बूझ तऽ ये हिनका आ हमरामे कोनो फर्क नजि। हमर सार के बिगुल छहुन ने?... हुनके ई साहेब बिबाकर बाबू एजकुटी इनवीयर पी इन्सु बी। हुनके पल तऽ कऽ आयल छथि। कार सँ अथलाह अछि। पोखरि कभी लऽग छोड़ि देने छथिन कार के। हमर सार तऽ अपने आवयबला रहथि हिनका संग परंच ओ अकस्मात बिमार पड़ि गेलाह... हे नरेन्द्रक हेतु अपन कान्याक प्रस्ताव तऽ कऽ आयल छथि।

मास्टर—ओ..."

बिचारक—ओ ई हमर परिचय थीक (जिबतें कागत बहार कऽ बैठ छथि)

घूटर—परिचय की देखैत छहुन... एहन सुनर परिचय कतऽ भेटतह?

बिचारक—मास्टर साहेब... दरअसल हम भाया मिडिया बला गवने बिचार नहि करैत छी। आ नजि तऽ दल-बोल आदमीक भोड़ जमा करबामे। चाही तऽ जतें कयामे जाइ ह-चारिटा भाड़ी आ दस बीस मीक गवित के तऽ कऽ जा सकीत छी परंच, हम बुझैत छियै जे..."

मास्टर—ओ ई तऽ बड़ उत्तम गप। कन्यागत आ बरागत सोझा सोझा बैसि कऽ गप करथि तऽ ई जे नवाच तरहक प्रसर, कि स-गंधी बग सँ मनमुटाव से सब काफी हय तय दूर भऽ सकीत अछि।

बिचारक—बाह। बहुत उत्तम बिचार। तखन हम तऽ अपने लऽग जर्जी दऽ देल... आव अपनेक जे बिचार..."

घूटर—जे बिचार की? अहिसे बढ़िया कथा कतऽ भेटतऽ? कान्याक विषय मे हमर सार गरेष्टी लिख कऽ पठौलनि अछि। परम सुखीला, गूढ़ कायमे दश, बी० ए० पास बढ़िया रिजल्ट... देखबामे अति सुनरि... थाप के



देखिते छहुन\*\*\* बड़का आफिर\*\*\*कपूक कमी मजि, जे मंगबहुन से  
सभ देवाक लेल तैपार\*\*\*

मास्टर—(तमसाइत) घूटर भाई\*\*\*अहाँ तऽ जर्नत छी हमर कोनो भांग नहि ।  
हम बहेजक एकदम विरह छी ।

बिबाकर—जो हमर एहन कोनो अभिप्राय नहि, भाव अपनेक आशीर्वाद बाढ़ी  
(जेबसे कोटो बहार कऽ बँत छवि) ई हमर बेटी रोलाक कोटो अछि \*\*\*  
राखि लेल जाओ, रोला के देखबाक बिचार हो तऽ \*\*\*

मास्टर—छी: छी: केहेव गन करैत छी, ई देखा देखी, बहेज पर बहेजक मांग  
\*\*\* ई सभ तऽ समाज के गर्ते मे छकेलेन आ रहल अछि आ अपने सभ  
सन विद्वान, उच्च घरक व्यक्ति सभ सेहो \*\*\*

बिबाकर—जो की फेल आय । बेटी बजा छी । जतहि जाइत छी बहेजक मांग,  
काया देखबाक प्रस्ताव, हम जे अड़िकऽ रहौ जे पाह नहि गनब \*\*\* बेटी  
के नहि देखावत तऽ हमर बेटीक बिवाहे नहि हैत ।

मास्टर—हँ सेहो टीके कहैत छी । पात्र नहि कोना एहि सभक अन्त होयत ।  
(फुलनाक धाक छिट्ठक संग प्रवेश)

फुलना—को यी लीगवा निरब ई विपन्न जो, सखन पुछतहुं जे कतऽ से पाहुन  
आयल छथि तऽ बल्लु वर्जत की भेल छल ?

घूटर—मास्टर एकरा सना कऽ बहका जे हमरा से नाचि भिड़्य \*\*\* तौ एकरा  
बहसा कऽ राखि देने छहक ।

मास्टर—फुलना \*\*\* खैर बाब मे गऽ करब \*\*\* पहिने जायन से जलपान आ चाहूँक

बिबाकर—मास्टर साहेब आ ई सभ छाड़ि देल जाय \*\*\*

मास्टर—बाह से कोना हैत अपने पहिल बेर \*\*\*

घूटर—अरे आज तऽ अखिते रहनुह, पहिने गण तऽ फाहल करहु \*\*\*

मास्टर—बिबाकर बाबू हमरा किछु समय देल जाय । हमरा लोकनि बिचारि कऽ  
अपने के सूचित करब ।

घूटर—सूचित करब ? दुर्गा-दुर्गा एते अमर्षल जहाँ किएक गण करै छह हो ?  
जे फाहल करबाक छह से अखने करह ।

बिबाकर—घूटर बाबू रहल धिरीन \*\*\* किछु समय तऽ आवश्यक छैक, बिचार बिमर्श

करबाक लेल । नरेन्द्रजी से पताचार करबामे किछु समय तऽ लगवे  
करतैन ।

घूटर—ओ की समय लगतैन ? हब नहि अनैत छी की ? हिनकर बात के नरेन्द्र  
कहियो टार नहि सकैत छनि ।

बिबाकर—बाह से तऽ छोट भाईक घर्मे आ नीक कुल-मीलक यह तऽ परिश्रम \*\*\*  
सधारि मास्टर साहूब बाहिया आशा करता हम पहुँचि जँब । (मास्टर  
से) मात एकटा अनुपरोध से जँ अपने बचन बी जे मागि लेब तऽ हम  
हिम्मत करौ \*\*\*

मास्टर—बिबाकर बाबू बचन होइते छैक पूरा करबाक लेल । हम कोनो ताहक  
बचन अखन नहि दऽ सकैन छी ।

बिबाकर—अपने हमरा गलत सूचित रहल छी । हम बिब.ह्वानक विषयमे कोनो  
बचन नहि मागि रहल छी । दरअसल अपनेक व्यक्तिगत, एहि झलकामे  
अपनेक मिथ्याक लेल समर्पण, छल लोकनि के अपन पाह दऽ तऽ मदति  
करब, ई सभ हमरा बाहू दिससँ पता लागि गेल अछि । हमहूँ बिछु  
तेहने घरसे आयल छी \*\*\* एक छवि घर मे भोजनक ठेकान नहि । परम  
आदरणीय शिक्षक छलाह महेशबाबू \*\*\* आजीवन बिबाह नहि कमलनि । \*\*\*  
अपन कमाएक सभ सन निर्धन मेधावी छात्रक पाठो खर्च कऽ देलनि ।  
हमहूँ जे छी से हुनके कुरा सँ । परन्तु, अहिया हमर स्थिति नीक  
भैत महेश बाबू नहि रहलाह । \*\*\* अपने के देखिकऽ हुनके स्मरण भऽ  
गेल । \*\*\* एहि संग मे पचास हजार टाका तऽ कऽ निकलल रहौ जे कतहु  
आवश्यकता परल त गनि देब । \*\*\* हमर निवेशन सँ जे ई टाका अपने  
राखि लेल जाय ।

मास्टर—(तमसाइत) :—बिबाकर बाबू ।... होथ मे सात कल । अपने जर्नत छी  
हम बहेजक एकदम विरह छी, अपने जा सकैत छी ।

बिबाकर—हमरा गलत नहि बूझी मस्टर साहेब । अहि टाका के बिबाह-दान सँ  
कोनो मतलब नहि । हम तऽ मात ई चाहैत छी जे अहि टाका सँ अपने  
निर्धन छात्रक लेल कोय वनयो आ कतेको नरेन्द्र के पढ़ा करौ \*\*\* अपने  
विन्यास करु नरेन्द्रक संग हमर बेटीक बिवाह हो सकबा नहि हो हमरा  
एको रत्ती दुःख नहि हैत (पैर पकड़ैत) ऊपरा हमर अनुप्रीत नहि  
दुकराबी ।

मास्टर — ई की कऽ रहल छी...अपने ?

बिबाकर — मास्टर साहेब हम अपनेक पर साधरि नहि छोड़ब आ धरि अपने अहि टाका के स्वीकार नहि करब। अपनेक रूप मे हमरा साक्षात महेन बाबूक दर्शन भऽ रहल अछि...हम हुनकर मध्य से उद्घाटन होमय चाहैत छी (कानऽ लगैत छथि)

घूटर — इनजीयर साहेब सभने ई की कऽ रहल छी ? विवाह दानक कोनो गप्पे नहि आ पचास हजार टाका बचो अहिना...!

बिबाकर — अपने बच्चा रहल जाओ...अहि मे विवाह-दानक कोनो प्रश्न नहि... ई हमर प.प पुण्यक हिसाब अछि। जे मास्टर साहेब हमरा एतेक कुलधन चुनैत...

मास्टर — नहि-नहि उठल जाओ...अपने सन अभ्युक्त हृदय जोड़ब महापाप हैत...अहि टाका के अपनेक दृष्टानुसार खर्च कैल जायत।

बिबाकर — हम अपनेके केना धमकाव दी से नहि ज्ञेय छी। हे भगवान महेन बाबूक आशमा आह कतेक प्रसन्न होइत हेतैह। बेश मास्टर साहेब, आव जाइत छी। आव असा देल जाओ।

मास्टर — ओ भेल।

घूटर — दो देखिहुक अस्सी सौ नरेश्वरके...!!!

बिबाकर — (तमसावत) :- घूटर बाबू हम एक बेर कहलहुं मे जे अहि समस्त विवाह दानक कोनो संबंध नहि...मास्टर साहेब के दुःख हेतैह आ महेन ब बूक आमा तऽ कलापि जेतैन, बलू...! (हुनक प्रस्थान)

(फूकनाक सोटा गिलास नेने प्रवेश)

फूकना — ग्राहिरिबा, ई सभ सब बनि गेला तऽ कर ओ हल्ला ककरा खेल जने छैक...मीके भेल बलि गेला। मलिकिनो मलिकिनो ओ सभ तऽ बलि गेला।

मास्टर — फूकना ई जे बिबाकर बाबू आयल छलाह

(स्त्रीक प्रवेश)

बहुं बाज...देखू ई फोटो पतिग्न अछि ?

फूकना — मास्टर साहेब...एगो बात बहू ? बलू ई काज मे घूटर पण्डित परत छथि, हमरा तऽ मोन नहि भागैऽ है—।

मास्टर — तो तऽ बेकार मे बदनाम करैत रहैत छहुन।

हुनका हमरा से कतेक प्रेम छनि। सभ दुःख सुख मे उपस्थित रहैत छथि।

फूकना — अहाँ कहियो नहि बूझि सकब बलू। सोझ आदमी के टेढ़ बात बुझेनाई मोक्षिक। मुदा एगो बात सुनिनिय बलू गारी चियाह अपने जेसन आदमी के लोड करक चाही...!

ई कार बला, पेंट सूट बला आदमी आ संग मे ली गिया भिरबाई, एक बेर खा लेब तऽ पानि पिबैत-पिबैत...!

मास्टर — अच्छा अच्छा। जो तोरा के बुरासय, जो अपन कायकर...!

(फूकनाक प्रस्थान)

(स्त्री से) — कहू पतिग्न परल फोटो ?

स्त्री — फोटो मे तऽ बड़ सुन्दर लगैत छथि, परं ब ई फूकनाक गप्प...एहीन-एहीन पैब लोकके देखि कऽ डऽ लगैत अछि। ई बेवसा केहेन छै। हुनकर छुटि गेलनि की ?

मास्टर — हा...हा...हा छूटि नहि गेलैन। अहि मे पचास हजार टाका छैक। एकरा नीक जकां राखि दियोक; काहि-भोर मे मचुबनी बैंक मे जमा कऽ देई।

स्त्री — पचास हजार टाका ? अहाँ...अहाँ पाइ तऽ कऽ बोनाक विवाह...!

मास्टर — ओपनी...ई से पाइ नहि पीक। अहाँ के कि विश्वास होइत अछि जे हम पाइ तऽ कऽ भाईक विवाह करायब ? एकरा राखि दियोक, हम आवैत छी तऽ स्थिर भऽ कऽ बुरा देख ! मास्टरक प्रस्थान)

(प्रकाश बन होइत अछि)

## दृश्य तेसर

(गोपबलि भोज । विवाकर बाबू आ घूटर बाबूक प्रवेश)

घूटर — आगे तऽ हज्ज कऽ देनो बाप रे बाप पचास हजार टाका अहिना दऽ देल  
“है मास्टर तेहने सनकी अछि जे.....”

विवाकर — बंदिगी की आगे मर्दि सुनरे ई तऽ बीर देखिदैक अछि “आ अहि मे  
मास्टर के गोतपऽ पढ़तंग । अपने रिपर भऽ कऽ तमांगा देखू । मात  
अपनेक ई काज जे छोरे-भीरे सो गे माय मे प्रचार करा दियोक जे  
मरेपक विवाह एक लाख टाका मे हमरा ओतऽ निश्चित भऽ मेन छन्हि  
प्रचार तेनऽ कऽ होयबाक बाही जे अपनेक नाम नहि जानय । (जेबसे  
टाका बहार करैत) ई हू हजार टाका बाओर राखल जाय, विवाह  
भेलाक बाद वीच हजार टाका आओर अपनेक कमीशन माने कि अप-  
नेक स्वागत साकार मे....”

घूटर — “है.....है । आगे निश्चित रहल जाओ । आव हमरा समटा  
बुझा रहल अछि ।

विवाकर — बेस तऽ आव आजा पिय । परंज जे कहल से मोन राखब । बीच बीच  
मे मास्टर साहेब से भेट कऽ कऽ पत्र द्वारा सम सूचित करैत रहब । बेस  
नमस्कार ।

(विवाकर आगू बढ़ि जाइत छथि । घूटर दवेया गनऽ समेत  
छथि । प्रकाश गन्त होइत अछि)

## दृश्य—चारिम

(मास्टरक घरक बलान । बेनालाल पटिया पर बैसिकऽ, पढ़ि रहल अछि ।  
अधिकांशक प्रवेश ।)

अधिकांश—मास्टर साहेब, मास्टर साहेब, बियार्थी, मास्टर साहेब घरमे छथि ?

बेना—आउ ने, बैसू मे । मास्टर साहेब कतौ गेल छथि अबिठे होगा ।

(अधिकांश कुर्सी पर बैसि जाइत छथि)

अधिकांश—की नाम अछि बियार्थी ? कैकर बालक छी ?

बेना—जी हमर नाम बेनालाल, हमर बाबूके नाम गोकुल मरर ।

अधिकांश—ओह, गोकुलक बेटा ! ओह विश्वास नहि होइत अछि, हमरा बिन्दैत  
छी ?

बेना—है । अहाँ अधिकांश बाबू, पटना मे प्रोफेसर छियै ।

अधिकांश—बाह । बहो तऽ बड़ सुन्दर बजैत छी । अच्छा ई तऽ कहू जे पटना  
की छी ?

बेना—पटना महर छै जा बिहारक राजधानी छै ।

अधिकांश—बाह-बाह अहाँ तऽ बड़ ठेक छी ।

मास्टर (प्रवेशक संग)—के ? भाई ! कहिया एनो ?

अधिकांश—आइये भाई, कहू की हाल बाल ?

मास्टर—सम ठीक ठाक । कहू कतेक दिनक छुट्टी मे जायल छी ?

अधिकांश—आठ परमानेंट छुट्टी मे....

मास्टर—ऐ की ?

अधिकांश—भाई रिजाइन कऽ देनो । तंग आबि गेल छी, ई युनिवर्सिटीक बाता-  
बरन सँ । एतेक दुखित, छी, छी, छी, माय पालिटिक्स, पढ़ाई  
लिखाई सँ कोनो सरोकार नहि । भगवानक कृपा सँ बाप पितो बहुत  
छोड़ि गेल छथि, आव सभे रहब, अपने लिखा पढ़ी करब ।

मास्टर—ओह ।

खश्रकान्त—भाई, ई फूकमाक भेटा उस बड़ संस्कारी बुझावत अछि ।

मास्टर—बड़ तेज, डिप्टीमेट स्कोलरशीप भेटलैक अछि । आव एकरा नेतरहाटक टेस्ट दियाकऽ ओतहि पढेबाक बिचार अछि ।

नेता—हम कती नै जब, हम सऽ अहीं सऽम पड़व मास्टर साहेब ।

मास्टर—यी एना जिहू नहि करब काशी, ओहि दुसकून मे सोहर जिनगी बनि जेनी ।

नेता—नहि नहि हम कती नै जायब । हम अहीं सऽ पड़व, हम कती नै जैब ।

मास्टर—अच्छा-अच्छा ठीक छी ओ अखेन आव काहिहू अखिहूँ...

(नेना बहना सामेलिकऽ प्रस्थान करैत अछि)

खश्रकान्त—साई पड़वियो एकरा हम चली छी, आव तऽ भेंट होइते रहत ।

मास्टर—अरे बूढ़ "भीमो तँ भेंट भेल की नहि ? हे यँ सुनैत छी, देखू के आयल छिय ।

(स्त्रीक प्रवेश)

खश्रकान्त—गौर तपे छी भोजी ।

स्त्री—कोना छी ?

खश्रकान्त—फहना ओजि रहल छी । अपन कहू ।

स्त्री—हमर की ?

खश्रकान्त—अहाँ के की ? अहींकऽ उस दुनियाँ अछि । देखैत नै छी छेठानी जकाँ चलैत जा रहल छी ।

स्त्री—धुर...अहाँ के छठ्ठा सुनैत अछि, आव तऽ लूक भेजौँ... आबो तऽ ।

खश्रकान्त—लूक ? हा हा हा, हे यँ भोजी, भाइ छिय एहिठाम तऽ की कहूँ... कहियो असगर मे भेंट हो सखैन नै बुझबै हम कैहेन लूक छी ।

मास्टर—हा हा हा, भाइ एकटा गप्प तऽ कहबै नहि केनी । नरेन्द्रक विवाह स्थिर कऽ बैलिनै । दिवाकर बाबू ओतय । अररिया में पी० डब्ल्यू० डी० मे एजबलूटिव इन्सपेक्टर अछि । अहूँके बरियातो चलऽ पड़त ।

खश्रकान्त—साहू, उत्तम गप्प । परं, भाइ बरियातो हम नहि जा सकब ।

मास्टर की कियेक ?

खश्रकान्त—भाई अहाँ तऽ जानिते छी के हम स्पष्टवादी छी । हम ई सिद्धांत मानौने छी जे जाहि विवाह मे लेन-देन भेल हो हम ओहि मे सम्मिलित नहि हब, आ' यहाँ अहि विवाह मे टाका सेलिमैक अछि ।

मास्टर—भाई के कहलक हू गप्प ?

खश्रकान्त—के कहल ? सौते गाम जनैत अछि जे अहाँ एक लाख टाका मनेलिमैक अछि ।

स्त्री—आव सुनियो । हम तऽ पहिने कहैत रही जे ई अचमो ठीक नहि अछि ।

मास्टर—जहाँ चुप रहू । एहेन सम्प आदमीक विषय मे अनुचित गप नहि बाओ ।... भाई हम सत्ते कहैत छी, एकटा साहू मनेनक विवाहक लेल नहि लेने छी । ओ तऽ दिवाकर बाबू पचास हजार टाका जबरैस्ती...

खश्रकान्त—जबरैस्ती की ? इहो सब जबरैस्ती होइत छैक ? खैर, अहाँक गप्प अछि, अहाँ जानौ । आव हम चलैत छी, काहिहू भेंट होत । (प्रस्थान)

(मास्टर भाष पर हाथ छऽ कऽ बैसि रहैत छथि)

स्त्री—ई सब घूटर भाईक काज छी । सौते गाम मे हल्ला करबा बैलिनै...

अहाँ हुनकर टाका आपस कऽ दियोनि ।

मास्टर—नै...नै...ओ एतेक मोक राजक लेल, कतेक नेहोरा कऽ कऽ ई टाका बैलिनै अछि, हम कोना आपस कऽ सकौ छी । ई घूटर भाई केर सेहो कोनो दोष नहि । हम तऽ अपने कौन गोटा के कहलियैक जे पचास हजार टाका दिवाकर बाबू, मरीब छात्रक हेतु दऽ गेल छथि, आब लोक सोसरे माने लगा लि एतऽ हम की कऽ सकौ छी । खैर, हमरा समझक अस्था पबिल अछि लोक के जे मोन होइ छै बाजऽ दियोक ।

स्त्री—हमरा तऽ डर लगैत अछि । कहीं बोभा सेहो ह सूनिकऽ तमसा नै जाबि । हे, हम तऽ फेर कहब जे कोनो गरीब घरक सुनौल कनियाँ...

मास्टर—(हमसाहत) :- अहाँ बेर-बेर एके रट किएक लगौने छी ? अरे स्टेटस कोनो पीब होइत छैक । सजजन अवस्थि के हम वचन दऽ देने छियैनै... विवाहक दिन निश्चित भऽ गेल, आव अहाँ इ तेसरे राग अलापि रहल छी... आव अछि विषय मे कोनो गप नहि हेबाक बाहो ।

स्त्री—जहाँ गिरु बाबू कि तमसा जाइत छी, पड़न-लिखल नहि छी तँ किनै... जे मोन हुए से कऽ...

(अखेन प्रस्थान प्रकाश बग्न होइत अछि)

## दृश्य पाचम

(एकटा कुर्सी पर मास्टर साहेब बैसल छथि आ नरेश्वर बगलमे ठाढ़ छथि । फूकना घर से अटेंची बेडिंग आबि समान सभ आनि आनिकऽ राखि रहल अछि । मास्टर साहेब रहि-रहि कऽ घरमा निकासि आबि पोछि रहल छथि । दरबखानाक पाछू नरेश्वरक नव बिबाहित आ मास्टर साहेबक रत्नो ठाढ़ छथि )

फूकना—(ऊठल बखर मे) :—हमटा समान बहार भऽ गेल, भिलाकऽ देखि लिय बलू । कष्ट छुटि जैत तऽ करे बहव जे बलू फूकने खोराकऽ अपन घर लऽ गेल ।

नरेश्वर—(जेब से एकरा धुर्गो बहार कऽ समान मिलबैत) हूँ समटा समान तऽ आबि गेली शरीर एकरा शृंगारदानी रहि गेली जो देने ओ.....

(फूकनाक प्रस्थान)

मास्टर—नरेश्वर

नरेश्वर—जी ।

मास्टर—अहाँक बिबाह भेना अधून माग बारह दिन भेल अछि आ द्विरागमनक माग पौन दिन । कहिहूँ सरफोदी छल आ माद जा रहल छी, कोमा-वन लगैत अछि.....बिबाह आ द्विरागमनक महमा गहमी सँ आएए सभ निवृत्त भेल अछि । बौधिसिन हाथक बनाओल भोजनी नहि केलहुँ निछु दिन रहि जैतो तऽ.....

नरेश्वर—भाई.....छट्टी.....एतेक पैच रिसासँबलोटी.....

मास्टर—हूँ सेत ठीके बतेक छट्टी लऽ कऽ ब्याल छी ताहि से वैसी नहि बड़ेबाक बाही । अनुकामन एकरे बहैत छेक । पान्च, कनिमा के जे छोड़ि दितबैन.....

(पचाक दोसर दिस)

रत्नो—कनिमा भाई तऽ ठीके नहि छथि.....अखन तऽ ठीक सँ हम सभ जहाँ के देखबो नहि केलहुँ अछि ।

रीता—नहि-नहि नहि सुखिन, जे हमरा बिना नरेश्वर के बतेक दिनकत भऽ जैवैन, नहि श्रृंवाक डंकान मे खेबाक ठेकान ।

फूकना—(हाथ मे पिकदानी नेने अवैल) बलू एगो बात पूछू छीतकी घालकिनी ..... जे बलू आइ तऽ बारह दिन पहिने नरेन बोआ के तऽ बलू कोनी दिक्कते नै होइ छलैन बलू इ बारह दिन मे ई कतऽ सऽ दिक्कते-दिक्कत.....

मास्टर—फूकना... वैसी बकर-बकर नीक नै अपन काज कर.....

फूकना—ठीके तऽ हमरा बकर-बकर करबाक कोन काज हऽ लिय नरेन बोआ अपन पिकदानी बलू ।

नरेश्वर—पिकदानी ! फूकना तोरा ई पिकदानी आन' के कहलकी ?

फूकना—अहाँ तऽ बलू कहलौ जे एगो इएह बोंच गेल अछि.....

नरेश्वर—ओएक हम कहलियो शृंगारदानी शृंगार वसता जा तो.....

रीता—ओ तऽ हम मेने छी (पदाक पाछूतें बजैत छथि । मास्टर साहेब अबाक भऽ जाइत छथि : फेर अपना के संयत करैत.....)

मास्टर—फूकना देख तऽ इ रसुआ रिबता तऽ कऽ भजि एगो अखन घरि । टूटनक टाहम भेल जा रहल छी ।

घूटर—(अवेशक संग).....अर्घ्य सँ जुनि होअह हो मास्टर । रसुआ आ' सोखिया दूनक रिबता आबि रहल छ । दोकान लऽग रिबता ठाढ़ कऽ कऽ चाह निबैत छल । पुछलियै तऽ कहलक जे नरेन बोआ सकरी बेकिन टिरेन पकड़ लेल । हो नरेन इ टा रिबता किएक मंगीने छह । बोहूँ मारते समान देखैत छियह ।

नरेश्वर—भाई असल मे.....

घूटर—ओ हो हो बुसलिय, बुसलिय सपरिबार जा रहल छह किने ?

नरेश्वर—जी ।

घूटर—जेबेक बाही.....जेबेक बाही.....आव मास्टर के कधीक कमी.....तोरा पढ़ा लिखाकऽ बड़का हाकिम बनाइने देखलुन आ' सोहर बिबाह मे पचास हजार टाका भेटलैन ताहि सँ बाँकी जिनगी.....

मास्टर—घूटर भाई.....

घूँट—तमसाइत किएक छह ? हमरा से कोनो बलत गप बना गेल की?

कूकना—यहाँ से बलु ननल गव किएक बजाएत... हरिश्चन्द्रक बाद तऽ अहि ने जन्म लेलो भो लौंगिया मिरबाइ पण्डित,

घूँट—देव दे कूकना, दोहर दिमाग बहुत बड़ि गेल छी, तोरा इ मास्टर माव पर रखने रहैत छीक तऽ जुनि बूझ जे... शी, तोरा सन-सन के हिम्मत नहि होइत छलै जे म्हर आप दावाक ज्योड़ी पर पैर धरैति।

मास्टर—कूकना

कूकना—जी मास्टर साहेब।

मास्टर—जो अपन काज कर। सुन... आंगन से पासबुक आ फेकबुक मंगने ओ... हमर एककूल बला जोड़ा मे हेत।

(कूकनाक प्रस्थान संग मे मास्टरक स्त्रीक प्रस्थान)

घूँट—ई नोक केने छह जे पाद पासबुक मे रखने छह। आइ कालिक जमाना तऽ... अँय हो मास्टर तोरा इनगोयर साहेब से पचास हजार दिया देलियह पण्डित, लौ तऽ एकटा ठगम विचार मे छबै नञि केसहक, मानटा इकारि सेलहक... बाहू दे एगजीयर साहेब कबो दिस एक पाद तक र बिगडा... आ केहेन बड़िया इलाका बाहू... घर गञि भेटलैन टाहि से की घर तऽ कष्ट गवाता प्राप्त भेलैन।

(कूकना पासबुक आनिकऽ बैत अछि)

मास्टर—(जिकार हुलास करैत) नरेन्द्र राजू इ पासबुक। अहि मे समटा पाद जमा करा देने छी-मधुबनी स्टेट बैंक मे। दासकर करालेव (पासबुक नरेन्द्रक हाथ मे हऽ बैत छथि। नरेन्द्र पासबुक खनटा-पुनेटा कऽ देखैत छथि)

नरेन्द्र—पचास हजार! भाई पूरा गवाता हमार! भाई बिबाह मे जे खर्चा भेल?

कूकना—से हमरा से ने पूछू जलू मास्टर माहेय अपन बलु किबन तऽ कहै छी जे परछीकेट फाउ से बहार बऽ कऽ बलु अहाँक बियाह मे खर्चा केलेनि।

नरेन्द्र—अँय, भाई ई अहाँ की केने छी प्रमिटेन्ट फंड से...

मास्टर—नरेन अहाँ हमर भाइये नहि बैटा सेहो छी। आरू ने तऽ माय के देखलौ आ ने बाबू के...

(रिक्ता आबि गेल अछि कूकना समान सन उठा कऽ लऽ आ रहल अछि)

मास्टर—भाई इ पासबुक अहाँक थोक अहाँ राखू। इ हम नञि लऽ सकैत छी।

मास्टर—नरेन जिन्द नञि करी...

नरेन्द्र—नञि भाई नञि ई हम नञि लऽ जा सकैत छी।

घूँट—केहेन असम्य छह। मास्टर तोरा पढ़ा-लिखाकऽ एतेक पंग आफीसर अहाँ लेल बनेलखुन जे हिनकर आशा के उलंघन करऽ, मास्टर कहै छथुन्ह तऽ पासबुक राखि लह।

नरेन्द्र—(भोजी लऽय जाईत छथि) भोजी... भोजी अहाँ भैया के बुलबुल... ई पासबुक राखि लिय भोजी...

स्त्री—बोधा राखि लिय आ' हमरा सभ के अहिठाम पाइक काबे कोन हेत।

नरेन्द्र—गञि भोजी नञि ई हम नञि कऽ सकैत छी। ई पासबुक अहाँ लऽ लिय भोजी। एतेक छोट जुनि बनाउ हमरा।

रीता—(नरेन्द्रक हाथ से पासबुक छिनैत) बहिन तऽ टीके कहैत छथि। एतऽ पाइक कोन गवाज हेत। कोतऽ नव घर बसेवाक अछि। पचीस तरहक खर्चा हेत... तऽ कतऽ से आनव? आब की बुझैत छिये जे हमर पापा फेर देबऽ ओता?

नरेन्द्र—रीता...

रीता—बिबिया किएक रहल छी...?

मास्टर—नरेन समय मऽ गेल, अहाँ रुम रिश्तापर बैसू।

(नरेन्द्र आ रीता बड़ैत छथि, प्रकाश अन्त होइत अछि।)

## छठम् दृश्य

(मास्टर बाथ पर हाथ धो कऽ बैसल छथि । स्त्रीक अङ्गन सँ प्रवेश)

स्त्री —आब उठू ने । स्नान कऽ कऽ पूजा पाठ कऽ लिय ने । कतेक अखेर भेल जा रहल अछि ।

मास्टर —हूँ... बारह बजि गेल अछि । आइ मोन कोनादन लागि रहल अछि । १४-१५ दिन सँ कतेक रमन-धमन छल । आइ घर एकदम उदास लागि रहल अछि । मरे बखन सोझाँ मे रहैत छथि तऽ कतेक मोन प्रकृष्टित रहैत अछि... हे ये हमर सोझाँ मे एकटा पोस्ट कार्ड हैत... मेने तऽ आइ, मरे के बिट्टो लिख बैत छियैन...

स्त्री —बिट्टो लिखबैत...? अहाँकेँ की भऽ गेल अछि आइ? बोझा तऽ बखन आधे रस्ता मे हेवा, समस्तीपुर सेहो नहि पहुँचल हेला आ । अहाँ बिट्टो लिखबैनि ?

मास्टर —जीकेँ कहैत छी । भोरे मे तऽ गेलाह अछि । लगेत अछि जे कतेक दिन भऽ गेलनि हुनका गेना... यै अहाँकेँ उदास-उदास नहि लागि रहल अछि ?... किछु कह्यो... नहि... अरे अहाँ तऽ कानि रहल छी ?... पता नहि आइ हमर दिमाग केँ की भऽ गेल अछि... आठ-सठ बजने चलल जा रहल छी... अरे अहाँ केँ उदास नहि लागत तऽ बेकार लगत... अहाँ तऽ मायो सँ बड़बऽ छियनि मरे केँ... काम मज्जा देखियैन... परब...

(गेनासालक बस्ता टंगने प्रवेश)

गेना —मास्टर साहेब प्रणाम ।

मास्टर —केँ गेना... आ बैस... पटिया बिछा ले...

स्त्री —गेना... आइ जो... काल्हि सँ पड़ऽ अबिहें... आइ दिनका बारम्बर दहून ।

मास्टर —नहि-नहि... पड़ऽ बियो एकरा... तापरि हम स्नान कऽ लैत छी... गेना पटिया बिछा ले...

(गेना पटिया बिछा कऽ बैसल अछि आ पढ़ल अछि)

गेना —ई सवाल नहि बुझाएत अछि... मास्टर साहेब एकटक आकाश बिस देखि रहल छथि)

गेना —(गुनः) मास्टर साहेब... मास्टर साहेब ई सवाल नहि बुझाएत अछि...

मास्टर —हूँ... ला... देखियो तऽ...

गेना —मास्टर साहेब... आइ अहाँ केँ मोन खराब अछि की? अहाँ एतहि पड़ि रहूँ... हम पैर जालि बैत छी...

मास्टर —नहि-नहि कोनो खास बात नहि हो अपन पढ़ाई कर...

गेना —नहि मास्टर साहेब... हम अहाँक पैर जेतबे करब

(अधबैस्ती कुर्सीपर सँ उठैबाक प्रयास करैत अछि)

मास्टर —हूँ... हा बड़ब जिद्दी म' गेल छे रे गेना... हा... हा... हा... सुनेत छी हूँ गेना बोहोना जिद्द करैत अछि जेमा मरे बच्चा मे करैत छ ताहूँ... नाई आइ हम अहाँक पैर जेतबे करब... हा... हा... हा...

गेना —(पैर जेतैत) मास्टर साहेब । छोटका मालिक अहाँ सँ शायदा कऽ कऽ किएक बाल गेनाह ?

मास्टर —शायदा... नहि तऽ । केँ कहल की सोरा ?

गेना —बाबू कहेत रहे जे छोटका मालिक बचन कनिमाक डरे लगइ कऽ कऽ अछि गेलाह... मास्टर साहेब लोक बिबाह किएक करैत छ ?

मास्टर —गेना भगवानक एहि सृष्टि केँ चलेबाक लेल लोक केँ बिबाह करऽ पड़ैत छैक । परब कहियो काल उ बिबाह बड़बुःखवासी होइत छै—अपनो लेल आ समाजक लेल...

(स्त्रीक फङ्गु लेलक घाटी आ गमछा मेने प्रवेश)

गेना —मास्टर साहेब हम बिबाह नहि करब आ कहियो अहाँकेँ छोड़ि कऽ मज्जा जैव ।

स्त्री —हूँ... दोड़ो बिबाह करब-कर केँ पुछैत अछि एहि बुझबा मास्टर केँ ?

मास्टर —अरे जाय बियो... अबैन बच्चा छै... अबैन की नुसऽ गेलै...

गेना —मास्टर साहेब... हम सब दुखी छियै... बिबाहक बाद लोक केँ घरबाली सँ डर होइत छै... घरबाली जेह कहैत छै सँह करऽ पड़ैत छै ।

रावी बाप रो बाप "रो केकरा देखलहीए घरवाली सँ डरैत ? तोरा मास्टर सहेब के हमरा सऽ डर होएत छनि की ?

मेना —मलिकिनी “अहाँ दूनु गोटे तऽ देवता छी । जान सभके तऽ सह हात छै” हमरा बाबु के सेहो माय सँ बड़ डर होइत छै \* छोटको मालिक तऽ छोटकी मलिकिनी के डरै—

स्त्री —गेना... सबरदार जे बीआक विषय मे एहन राख बजलें । के कहलकी तोर ई सभ... ?

गेना —बाबू लुहैत रहे....

सूत्री --इ फूटना अपना कै की बजैत अछि ? अनाप सनाप" (फूटनाक प्रवेश)  
फूटना बौआक बिषय मे तो सब की बजैत घरैत छै ?

भूकना :—ठीके तऽ बजे छी बलु'''अहाँ दूनू गोटे तमसायक तऽ तमसाउ'''मुदा  
छोटका मालिक आ छोटकी मलिकिनो जे कोलैन बलु से हमरा एको पाइ  
नीक नहि लागल''

रवि -- तोरा नीक लगवा नइ लगला सँ कोन फर्के...बेशी...काशीलहीक दावा  
छाँ ॥5॥ ओ अपन घरक रस्ता पकड़ु...हमरा कोनो जरूरत नहि अछि  
साहब...

फूटना —“मं मलिकिनी” एता नञि निञाल् बल् ।

मास्टर --जाय दिखो "ई मनपढ़ अछि" हुरैक बात के अपना हिसाबे खैत छै"  
फुलना जो अपन काज कर"गेना जो काहि सँ भविहें"...

मेना -- (सकुचावत) मास्टर स हेव अहाँक मोन खराब भलि... अहाँ कतौ मजि जाति । घरे मे बाराम करू...''

मास्टर — गैना एमहूर सुन (अपरा लसय बजा ओकर साथ पर हाथ राखि दैत छथि)  
 ... नहि जायब " जतो कहि जायब... घरे मे रहब... आव तो... जो...

(येना अपन बस्ता उठा फऽ जाइत अछि)

(प्रकाश ब.न)

(एतद् 'महायान्तर' इति वा संस्कृतं अस्ति)

दृश्य सातम

(नरेंद्रक शहरक डेरा'क झाड़'ग हल । साधारण । एकटा सोफा-सेट । हममे एकटा टूल पर टेलिफोन । नरेंद्र आफ्टर जेबाक लेल तैयार छथि ।)

नरेन्द्र—रीठा .... रीठा....

रीता—(प्रवेशक संग) अरे एतेक चिचिया किएक रहल छी ?

सुरेश—रीता हमर जेब मे पाँच सय टाका छल ?

रोता—हैं '... जो उस हम पछिला भास जे साथी उधार लेने रही तेकरे देनाक लेस निकाल लेलीं ।

मरेश्वर—ओह... ओ तऽ हम भैया के पठेबाक लेल रखते रही आ।...

रीतः—घरक तऽ सचँ नीक जकाँ बलिसे रहि अछि आ अहाँ के भैया भोजी सुधैत छथि—हुँ—” अहाँक पोस्ट पर जे सभ छथि हुनकर सभक

नरेश — शोष जो रीता.....अहाँ बुझत किए नहि छी जे अनकर देखा-देखी  
करबा मे लोह के गर्त मे डूब पड़ैत छैक ।

रोता — के कहैत अछि गंत से दूबऽ ? नहि दूबु ... तखन पैया खोजीक  
चिन्यो नहि कहू...

नरेश्वर—कैना नहि कइ—ओ ह्वर भाई-भोबीयेडा नहि छथि। जो तइ ह्वर  
 नदी-बाध से बड़ि क' छथि... भाई काठ मास अइ गेल ह्वर सभ के  
 गाम से एना... ह्वर मास दरगाहा से पाइ पठब जाहौं पारना...  
 ओ अपन पेट काटि कइ ह्वर पड़ौल मासिसेट फाकल पारि... ह्वर  
 बिबाइ मे खर्च कैलक सकरा ह्वर दरगाहाक मथुरी नदीब नै...

रोता—हूँ। नवीन नै—दरमहाक सभ पाईक मधुर कोन लिय बा जाउ  
अपन भाई भोजी के खुआ दियोन—सँह रहय तऽ हमरा कियंक  
अनलहूँ।

न.रेड्—ओह रोता—तबनाउ जुनि कने हिचर मोन सँ सोचू कि हमरा सबहक ई कर्त्तव्य मझि जे हुनका लोकनि के खुश रखबाक प्रयास करो, हुनका लोकनि सेल चिन्तित रही—



रीता—बिना सारी हमही सब करी। हुनका लोकनि के हमरा सभक कोनो चिन्ते नहि। आइ धरि एकटा पोस्टकार्डो नहि लिख भेलैन जे हमरा लोकनि कोना छी ?

नरेश्वर—हमहूँ तऽ एकोटा पत्र साजे नहि लिखलियैन अछि। सभ बेर सोचैत छी जे पाइ पडेबनि तऽ संगे चिट्ठी लिखबनि परज्ज... खैर हम चलैत छी... आकिस समय भऽ गेल... (प्रस्थान)

(प्रकाश बग्न होइत अछि)

(पुनः मंच पर प्रकाश। रीता एकटा पत्रिका पढ़ि रहल छथि। पाठ्य सं वरनामा टुकड़ेबाक एवं पोस्टमैनक स्वर। रीता बड़ि कऽ बरबका फोलेत छथि आ पोस्टमैन सं चिट्ठी लऽ लेत छथि।)

रीता—बोफक फेर चिट्ठी... पता नहि ई चिट्ठी एनाइ कहिया बाब हैत (फोर्स भऽ पढ़ैत छथि।) पाठ्य सं मास्टरक स्कोर स्वर मे चिट्ठी पढ़ल जाइत अछि।)

प्रिय बीआ,  
शुभाभाष।

अहाँक भैया कतेको पत्र दऽ चुकल छथि परज्ज एकोटाक जबाब नहि। आइ हु मास सं बिछाओन पकड़ने छथि अहाँक भैया। स्कूल सं छुट्टी नेने कतेक दिन चलत ? मोहोर डाक्टर करैत छथिन जे टी० बी० भऽ गेल छनि। हमरा तऽ किछु नहि फुराइत अछि। घरक खर्च, दवाईक खर्च चलब आय बहुत मोबाकिल भऽ गेल अछि। बीआ अहाँ एना किएक तमलाएब छोड़ि हमरा सय सं कोनो गलती भऽ गेल हो तऽ क्षमा करब। परज्ज कम सं कम एक बेर अपन भाई के देख जाउ। ओ तऽ मात्र अहाँक नाम लैत रहैत छथि।

अहाँक,  
भोबी

रीता—हूँ... अहीक भोबी (चिट्ठी फाड़ि कऽ टुकड़ा-टुकड़ा कऽ बँट छथि)  
रश्मियाँ... रश्मियाँ

रश्मियाँ—(प्रवेशक संग) जी मेम साहेब।

रीता—(फाड़ल चिट्ठी देत) एकरा बाहर मे फेंक दही—  
(रश्मियाँ लऽ कऽ बलि जाएत अछि, प्रकाश बग्न)

## दृश्य आठम

(भोशका समय। नरेश्वर सोफा पर बैसल एकटक जबर देखि रहल छथि। रश्मियाँ चाहूँ राखि जाइत अछि। कनेकाल बाद)

रीता—(प्रवेश) अरे... सामने चाहूँ राखल अछि अहाँ एकटक छत के निहुरि रहल छी ?

नरेश्वर—अरे रीता... भरि राति निगन नहि भेल... तेहेन-तेहेन सपना देखतहुँ अछि भैया-भोजीक बिषय मे

रीता—बस फेर मुकु भऽ गेलो—भोर होइते भैया-भोजी

नरेश्वर—रीता... रीता कनेकाल हमरा असपरे छोड़ि दिय।

रीता—बाहू अतपरे छोड़ि दियऽ तऽ हम को देवाल सं गप्प करी। भोरे-भोर लोक नीक-नीक गप्प करैत अछि आ अहाँ के तऽ बस असपरे छोड़ि दिय... मुठु आइ रवि अछि... चलू कतो घूमऽ चलैत छी...

नरेश्वर—आई ? नहि... फेर कोनो दोसर दिन...

रीता—हूँ... अच्छा आई बजार चलू फ्रीज किनबाक अछि...

नरेश्वर—फ्रीज ? फ्रीज कीनब से पाई कतऽ अछि ?

रीता—पाई ! पाई Instalment मे देबै—कोन एहन रोकानदार अछि जेकरा अहाँ कहि देबै आ ओ Instalment पर नहि देत... आखिर अहाँ Income Tax Officer छी...

नरेश्वर—रीता अहाँ हमर स्वभाव जानै छी तयन फेर एहन गप्प करैत छी...

रीता—राखू जयन स्वभाव अपने सऽ। हमरो लोक पछित अछि हम अपने जा कऽ भाई फ्रीज जनबे करब...

नरेश्वर—रीता सबरदार जे एहन काज केलो तऽ ठीक नहि हैत

रीता—फिएक ठीक नहि हैत... अहाँ जे करी से सभ ठीक आ हम गलत। हमर पापा देवऽ चाइत छथि से नै लेब। अपनो नै कीनब... हूँ हमर पापा बला पचास हजार टाका; बँक मे रखने छी दुनू पाई मिलि कऽ आ हमर घर...

नरेश—रीता हमर भाई पर कर्लक जुनि सपाउ ओ तऽ पासबुक बऽ बेने छथि... परन्ध ओ हुनकर पाई छनि । ओ एकटा नोक काबक सिल अहाँक पापाक अगुरोध खोहार बऽ ओ पाई लेलनि । हम ओहि मे सँ नहि छू सकैत छी... अहाँ के मोज ने चाही ठीक छै परन्ध दिनक भीतर मोज आवि जैत

रीता—सत्ते कहैत छी ?

नरेश—हो... आवि जैत...

(पावस सँ घूटरक ब्यर—नरेश हो नरेश)

नरेश—अरे ई तऽ घूटर भाई दुसाइत छथि, दरबगवा फोति) अरे घूटर भाई अहाँ... आउ-आउ... रीता अहाँ भीतर आउ घूटर भाई आवि रहल छथि

रीता—के घूटर भाई ? ओहो बँह ने जे हमर विवाह मे पापा के मदल केने छलथि... अजि पबास हजार टाका बला पासबुक दिदा बेने रहथि

नरेश—(तमसाइत) रीता...

(घूटर प्रवेशक क्षण)

घूटर—दुर्गा... दुर्गा... हो एना नयो घरवाली पर लमसाय—घरवाली पर लमसाय अर्थ अपना आप पर लमसा... हो घरवाली होइत छै, अहाँगिनो... ताहि हिसाबे लमसा तऽ अपने आधा अंग पर... कह' कोना छह ?

नरेश—नोक छी । घूटर भाई, भैया आ भीजी कोना छथि ?

घूटर—हो हम तऽ मास भरि सँ बाहर छी... नून बतऽ चाईबासा गेल रह्यो... 'आब' तऽ नहि दैत छलाह । आ तेहने आबेगी हमर पुत्रोह... आब आपस होइत रह्यो तऽ सोचलहुँ हू चारि दिन तोरो अन्न छेने बची... बीजासीन एक गिलास जल चाही ।

रीता—जी सुरत... (प्रत्याग)

घूटर—हो नरेश एतेक पड़ि लिख गेलह । एतेक पैष पोस्ट पर छह लथपि ई दक्कियानूसी बिचार । हो हम तऽ पहिल बेर जखन चाईबासा गेल रह्यो तऽ नूनूक घरवाली के कहि दैलथि जे हे बीजासीन ई पाय गहि

छैक, गहर छैक... अहिनाम १२१ करबाक कोनो औचित्य नहि आब रहल थेटा पुत्रोह पोता, पोती सब संगे वैसि बऽ लाईत छी...

नरेश—परन्ध भाई, ई उचित नहि...

रीता—(अपक संग प्रवेश)—को उचित नहि ? घूटर भाई दस दिन एतऽ रहलाह—अहाँ बलि जैब आकिस... हम ओहि घर मे आ घूटर भाई एहि घर मे माघ पर हाथ बऽ कऽ की बैसल रहब ?

नरेश—अपक... (उठैत) अहाँ के बुझाय । घूटर भाई, हम कने अबैत छी । (घर चल जाइत छथि)

घूटर—बड़ लमसाह बऽ गेलाह अछि नरेश... बीजासीन प्रसन्न छी किने ।

रीता—की प्रसन्न रहब । हिनका तऽ भोर सँ साँझ धरि भैया-भोजी भैया-भोजी अपवा सँ कुसैत नै...

घूटर—ओह ! एऽ माहटर अखन धरि... सँह तऽ कहैत रह्यो जे एतेक पैष अकसर आ घर मे किछु नहि । ई बीयर साहेब तऽ कहैत छलाह नरेश दू-तीन साल मे कैकटा ई बीयर के कोन सकैत छथि ।

रीता—हो... पापा कत' हमरा छेकैत दैलनि !... दरमाहा सँ संतोष कऽ बहैत अछि... । पाहथि तऽ की नहि कऽ सकैत छथि । लाख-दू लाख तऽ मास हू मास मे... बुदा ई एऽ हरिषचन्द्र...

घूटर—भाई छथि... सँह ने ।... मुरा माहटरो के एऽ हालत बड़ खराब छै । आई दू मास सँ दो बी० तऽ बऽ घर मे पड़ल अछि... पोहार डाक्टर कहैत छल जे जादो कीनी... कीनी बिमारी छै... नरेश के नहि कहियनि जे...

रीता—नोक केन ।... आ हे हिनका बिछु कह्यो जुनि करियोन नहि त'

घूटर—मुरा माहटर तऽ कैकटा चिट्ठी निखलकै अछि । नरेश के... पता तऽ हेबे करतैन... बऽ सकैत अछि अहाँ के नहि कहने होथि...

रीता—(लज्ज आवि)... घूटर भाई हिनका बिछु बुझल नहि छनि, सभटा चिट्ठी घरक पता सँ अबैत छै । आ' हिनका हम एकोटा न' दैलियनि आछि...

घूटर — बाहूँ बाहूँ नौक काज केने छीं बाब बुलाइत अछि अहाँ  
हनजीवर साहूबक अलसी बेटी छीं हमार सार अहाँक बिषय मे  
लिखने छलाह जे खूब पढ़ल-लिखल, गृह कार्य मे दस चतुर से सभ  
उचिते परग्व, बीआसीन हम् घूटर । कने हवरो पर सेवास  
राख अल मे घूटर के पेटे बलाय । घूटर के जे नौक-नौक बयनन  
से पेट नहि भरैत छनि तऽ पेट मे बात पचबे नहि करैत छनि

नरेन्द्र — (प्रवेशक संग) की नहि पचैत अछि घूटर भाई ?

घूटर — हो बीआसीन माउस मंगेबाक गप करैत छलीह तऽ संह कहलियनि जे  
बाहरक माउस तऽ हमरा पचिते नहि अछि । नौक हेतह जे माछे लऽ  
अबहूँ बाहेँ अहि सभ ठाम मोषकिल से तकला पर बगोरी नेबो  
भेटैत छैक, से अबस्ये मेने अबिअहूँ ता हम् कने डोल-डाल से निवृत्त  
होइत छीं केमहार अछि बाप रुम बीआसीन ?

रीता — हेँ हेँ अबियो ने एमहर ओहि रिस

(घूटरक प्रस्थान)

नरेन्द्र — आइ रवि कऽ हँ माछ माउसक गप किएक छेलेहूँ अलन तऽ  
रहबे करताह दोसर दिन अचितहूँ

रीता — ओ बेचारे ऐसक दूर से एलाह अछि हमार की अहाँ के ने भाई छिय ।

नरेन्द्र — भाई बाहूँ बाहूँ छिय साउ छोड़ा

रीता — अरने किएक जेब चपरासी

नरेन्द्र — ओ हमार बापक मोकर नहि अछि जहिना हम सरकारी मोकर  
तहिना ओहो साउ छोड़ा

(रीता छोड़ा आनिक ईन छथिन नरेन्द्रक प्रस्थान)

## नवम दृश्य

घूटर स्नान क' क' खुश जोर-जोर से दुर्गाक पाठ करैत आबिक  
सोफा पर बैसैत छथि । दुर्गा पाठ चलि रहल छनि — बीस-बीस मे माछक  
मुँध सेबाक अभिनय करैत छथि )

रीता — घूटर भाई भोजन परोसी ने ?

घूटर — हेँ हेँ अहि मे किएक बिलम्ब ? नरेन्द्र स्नान कैलैन ?

रीता — हेँ ओहो तैयार कऽ गेल अछि ।

घूटर — बीआसीन अहाँक घर मे ओ की कहैत छैक डानी टेबुल नहि देखैत  
छी ? हमर नूतन किरानिये छथि परग्व ओहो डानी टेबुल रखने  
छथि डानी टेबुल पर सेबाक मजे किलु आओर होइत छैक । समटा  
बीस वस्तु सामने राखल रहल जेकरा से जेक सेबाक हो  
छाय

रीता — हमरा ओतऽ की देखब किछु नहि हमर पापा की नहि खरीद कऽ  
रखने छथि हमरा सेल फ्रीज, टी० बी०, पलंग, ड्रेसिंग टेबुल कार  
तक खरीद कऽ ई लेल तैयार छथि । परग्व, ई तऽ सेना कऽ ने हमर  
पापा के बाजि छटैत छथिन जे की कहूँ घूटर भाई बाब बहुत दिन  
तक हम नहि रहि सकैत छी इतनाक संग

घूटर — दुर्गा-दुर्गा अहना कयो सोचब बीआसीन भगला से काज चलत ?  
जैर आब हम आबि गेल छी सब ठीक कऽ जैव होच भोजन  
परोसू

(रीता क प्रस्थान नरेन्द्रक प्रवेश)

घूटर — आबहूँ आबहूँ हो खुह किएक लटकल छहूँ ?

नरेन्द्र — नहि तऽ, कहाँ ?

घूटर — सो कहबहूँ से हम मानि जेना सेब । हो मँथिलक घर मे जहिना-जहिना  
माछ बनैत छैक तहिना-तहिना तऽ ओकरा चेहरा पर सोँसे संसारक खुशी  
रहैत छै ओहो जकाँ अबाध काँओर बनल नै रहैत अछि बहूँ देखब  
आबि रहल छहूँ

(रीता टेबल पर भात माछ क घरी-बाटी रखैत छथि । संग मे नोकरानी रसिमयी गिलास मे जल लवैत अछि ।)

घूटर—शुरू करहु... (किछु मंज बुदबुदा कऽ भोजन आरम्भ करैत छथि)  
...बाह-बाह रह ताहु पर जमीनी नेबो—बाह बड़ दिख्य... बहुत स्वादिष्ट... बाह बोझासीन अहाँ तऽ अपूर्व भोजन बनबैत छी... बाह...  
...बाह...

रीता—घूटर भाई ! अहि मे हम बिछु नहि कैलो... ई सभ अहि छौंड़ीक बनायल अछि ।

घूटर—अब... ई छौड़ी के ?

रीता—हमर पापाक जे भंतिमा छथि तकरे सेटी छै रसिमयी... हे गै रसिमयी जो जऽ मे पानि भेजे आ ।

घूटर—संस्कारक असर छै—संस्कारक असर छै... (जोमहर रसिमयी जऽ लऽ कऽ खाबि रहल अछि कि जऽ लऽ खति पड़ैत छै । रीता बड़ि कऽ ओकर केश पकड़ि कऽ गाल पर थापर सँ मारैत)

रीता—तोरा सुनै नहि छी । खानी बदमाशी । तेहेन मारि मारबौ ने... सो से घर गंदा कऽ देलक...

रसिमयी—हम की कोनो जानि कऽ खसैली ?

रीता—केर मुँह लागल जबाब... (तरा तर मारऽ लवैत छथि)

(रसिमयी कागऽ लवैत अछि)

नरेन्द्र—अरे किएक बेधारी के मारि रहल छियै ?

रीता—मारिये नै तऽ की ? कोरा मे तऽ कऽ हुषार करिये ? ई सब सातक देवता अछि... बात सँ सुनि नहि सकैत अछि...

नरेन्द्र—ओपक... बरू जे मोन हुए से...

रीता—(रसिमयी सँ) चल आब मुँह की देखैत छै ? जो कपटा जानि क' पोछ सो से घर...

घूटर—बोझासीन—नरेन्द्र के माँझ दिशोन—एक आब कुटिया हो तऽ हमरो देब...

रीता—हे-हे रहवै किएक नजि (जाइत छथि आ माछ आनि कऽ बँत छथिन)

घूटर—बाह... अहि ठाम तऽ माछ बड़ सुन्मर भेटैत छह तोरा सभके... हो एतहि एकटा बड़िया घर बना लेह... हमहूँ सब कहियो काल मास दू मास आवि कऽ रहब

नरेन्द्र—भाई घर खोनाई एतेक आधान नहि—अखन तऽ हम नोकरी मुच्ये कैलो अछि... पहिने शामक घर...

घूटर—छी: छी: । मामो आब रहबाक ओशरक रहि गेल अछि... हो बनेबाक छ तऽ एतऽ बनाबह । तोरा कबिक दिनक... अपने एतेक पैस आफिसर छह... आ ताहु सँ नहि तऽ इनजीयर साहेब जे चाहिये तऽ बाइये बनबा देखुन ।

रीता—पापा... ई... कोन मुँह सँ पापा के कहबनि... पहिने ओ पचास हजार...

नरेन्द्र—रीता... अहाँ नै चाहैत छी जे हम भरि पैस भोजन करी ? बेर-बेर पचास हजार... (छठि कऽ भीतर खलि जाइत छथि फेर हाव ओ कऽ बाहर अबैत छथि । संग मे चेक बुक आ पास बुक छनि) । लियऽ ई पासबुक आ बँत कऽ बादू... (बाहर दिस प्रस्थान)

रीता—नरेन्द्र... मुनु तऽ... ओपक... हमर तऽ करमे बरल अछि... भरि पैस भोजनो नै कैलनि...

घूटर—अ... हा... हा अपन कर्म के दोष जुनि री... दुर्गा... दुर्गा जे होइत छैक छै छीके होइत छैक

(फोनक घंटी टनटना लटैत अछि । रीता बड़ि कऽ फोन उठबैत छथि ।)

रीता—हेलो । Mrs. Narendra speaking.

...

ओहो... नमस्ते

...

जो

...

जी हूँ। वे तो अभी-अभी बाहर निरखे हैं।

....

जी कहूँगी।

....

जी बार-बार दिन के लिए

....

हूँ

...

जी तमस्ते।

रीता—मन्दिर के चारि पाँच दिग के सेल दूर मे जाय पड़तनि। हिनकर  
साहेब फोन छलनि....

भूटर—अच्छा बोलासीन सबरेवाक कोनो बात नै। त-घरि हम तऽ रहबे ने  
करब... एक आध कुठिया...

रीता—हूँ हूँ बने अबैत छी...

भूटर—बोलासीन माछक भूड़ा तऽ कतहु देखबा मे नहि आयल

रीता—भूड़ा अइत छी अपने की?

भूटर—दुर्गा-दुर्गा बोलासीन हमर सार कहैत छथिन जे जेने साथ भूड़ा  
सकरा साथ मे भरल कुड़ा... जेतेक हो सभ नेने ने आउ...

(रीताक प्रस्थान... प्रकाश बल)

॥

## दसम दृश्य

(भोरक दृश्य। रसिमया घर मे बाड़नि- दऽ रहल अछि। दोसर कम से  
भूटरक आँखि मिरैत प्रवेश।)

भूटर—दुर्गा-दुर्गा... नै रसिमया एक गिलास अल पियो।

(रसिमया अइत अछि आ अल आनि कऽ बैत छनि)

भूटर—दुर्गा-दुर्गा... रसिमया मेम साहेब उठलखुन?

रसिमया—नै... सुते छथिन। आई साहेब नै छथिन ने तऽ दस बजे सँ पहिने  
नै उठथिन।

भूटर—ओ... रसिमया...

रसिमया—जी

भूटर—एमहर सुन।

रसिमया—जी... कहूँ

भूटर—बैस... एहिठाम...

रसिमया—कहूँ मे की कहूँ छी...

भूटर—अरे... एहि ठाम बैस ने... हमरा लग

रसिमया—नै तोफा पर हम नै बैसब... मेम साहेब भारतीय

भूटर—अरे सँह देख कऽ तऽ हमर करेज फाटि पाइल अछि। आ हा-हा  
पूलसन बच्ची के कोना बाण्डालिन जकी भारत अछि ई भीषी।  
एटा हमर नूनूक स्त्री छथि... अपनी बाल बच्चा सँ नीक  
जकी नोकर-चाकर के रखैत छथि।

रसिमया—साहेब ई नूनू के छथिन?

भूटर—नूनू? हमर बेटा पाईबासा मे छथि। अहिना सोहर साहेब छथुन साहू  
सँ पैस साहेब... सुन एकटा बाल कहैत छियो... केकरो कहियही नै...  
ने तऽ मेम साहेब फेर भारतीय... नै नै कहबही।

रसिमया—ने

घूटर—सुन तोड़र हँ बणा देखि कऽ बड़ दुःख होइत अछि । तँ जेँ तँमार हो तऽ  
 . तोरा हम चुपचाप नूनूक ओतऽ पहुँचा दिखी... ओना तऽ नूनू के नीकर  
 बाकरक कोनो कमी नै परम्भ हमरे भेटा दिकाह... नहुननि तऽ तोरो  
 राखि लेयुन... दोसर के भले हटा देखिन... आराम सँ रहबे जब नीक  
 नीक कपड़-लत्ता समक संग हाजी देखल पर भोजना मे मारि गे पीट  
 ... बाब चलबे चुपचाप नूनूक ओतऽ चारिबासा—

रसिमयाँ—लेकिन हमर बाबू... ओकरा पता लगतै तऽ मारत

घूटर—पता लगतै कोना... हम धोड़ै कहऽ जेवँ ... आव तँ सोचि जे... एहिठाम  
 जाधा देद पर मारि पीट खाइत रहबाक इच्छा हो तऽ बड़ बेम...

रसिमयाँ—ही हम चलब... मुदा हमर बाबू के साहेब माये भास पचास टाका दैत  
 छियनि—

घूटर—सँ हमर नूनू सय टाका देखुन । से सब हम मार मे ठीक कऽ देखो ने... तँ  
 अरुन चुपचाप रहियँ... हम जाय लागय तऽ तोरा चुपचाप नेमे चलबो...  
 ठीक ...

रसिमयाँ—ठीक... कहिय जावँ ?

घूटर—सँ तूके अगुवा किएक गेलै । स्थिर रह । सम हमरा पर छोड़ि दे...  
 जो अखन अपन काज कर... दुग... दुग... (रसिमयाँ बाड़नि देहऽ लगत  
 अछि, बाहर सँ दरतण्जा डकड़ैबाक स्वर )

घूटर—सँ रसिमयाँ देख तऽ... के छी ।

रसिमयाँ—हू बला गेलै... रहि कऽ दरतण्जा घोलैत अछि फेर आबि कऽ) देखियो  
 हू तीन गोटे छै । (घूटर बड़िक दरतण्जा लग जाइत छिय फेर) ...

घूटर—अरे मास्टर ... चन्द्रकान्त बाबू... बाउ बाउ मास्टर की हाल  
 केने छह... (रोमियाह मास्टर साहेब के चन्द्रकान्त बाबू पकड़ने भीतर  
 अनेत छयिन । पाछा-पाछा मेलासाय समन सऽ कऽ अनेत अछि)

चन्द्रकान्त—भाई एहहि... हाबि... एहि सोफा पर पड़ि रहू (मास्टर के उकासी  
 आ दर्ब पर शान केने छनि । ओ सोफा पर पड़ि रहैत छयि । देना  
 समान राखि कऽ मास्टरक पैर दबावऽ लगैत अछि ।)

मास्टर—ने... ना... भरि राति तँ दुन मे जयने छै । कोनो कोना मे चुपचाप

पड़ि रहू... । घूटर भाई... नरेन्द्र कतऽ छयि ? (देना आ गऽ एवकास  
 मे पड़ि रहैत अछि )

घूटर—नरेन्द्र तऽ दूर पर गेल छयि । हमरो कि भेट भेल-नीक जकाँ । मुनुक  
 कऽ ओतऽ सँ आपस होइत रही तऽ सोचलहुँ हिनको सम सँ भेट केने  
 चली । हम एमहर एली आ' ओ ओमहर दूर पर । जबदस्ती हमरा  
 रोकि लेलनि जे हम आपस अनेत छी तखन जायन । तोरो हाल कहियनि-  
 यनि ततबो समय नै भेटल ।

चन्द्रकान्त—घूटर । हाल समाचार कहुवा मे मात्र एक सँ दू मिनिट लगत छैक  
 ... खैर, नरेन्द्रक बाङ्गन सँ तऽ छयिन ने ?

घूटर—है... है सुनल छयिन... हम अखने उठा दैत छियनि ।

चन्द्रकान्त—अहाँ उठैनि ?

घूटर—नै... नै हमर कहुवाक माने ई जे-उठवा दैत छियनि ... रसिमयाँ...

रसिमयाँ—जो...

घूटर—जो अरन मेय साहेब के उठा पहन । कहूनि ग'जि गामसँ मास्टर साहेब  
 आ चन्द्रकान्त प्रोफेसर आबल छयि ।

(रसिमयाँ भीतर जाइत अछि आ कनेकाल मे रोता के  
 गहड़गाउन पहिरने प्रवेश)

रोता—घूटर भाई किएक हमरा उठवा देलहुँ... के आपस अछि ?

घूटर—अरे रे बीभासीन भीतर रहू मास्टर आपल अछि

(रोता हड़बड़ा कऽ पश्चात् अड़ भऽ जाइत छयि)

चन्द्रकान्त—बीभासीन । हम प्रोफेसर चन्द्रकान्त । हिनकर भँसुर के जबदस्ती  
 गाम सँ उठा कऽ अनने छी । नरेन्द्र तऽ मज्जा छयि । ताहि हेतु ई कने  
 नीक जकाँ सुनि लेथु । मास्टर साहेबक स्थिति बाइ के मास सँ बस  
 सँ बदल भेल गेलैनि अछि । पोद्दार बाबटरक हिसाब ई टो० बी०  
 बी० । परज, हमरा इ बिश्वास नहि । भाई के कोनो आबोर संभोर  
 रोग छनि तकर बाँका लोड । सँ जबदस्ती हम तऽ अनियमित अछि...  
 भाई हम मुनिमसँदी मे जान मिश्रक ओतऽ चलेत छी हुनको सँ  
 परामर्शक कोनो नीक डाक्टर सँ देखिबाक व्यवस्था करब ।

मास्टर—भाई अहाँ किएक एतेक परेशान भऽ रहल छी । बोआसीन छविहे...हू  
एक बिग मे नरेश्वर सेहो आवि जेताहू...

बन्धुकास्त—ठीक छै भाई...हम संध्या काल आवब ।...। बोआसीन हिनकर भोजन  
भात मे काफी समयक आवश्यकता छनि...बेधा, भाई तऽ हम खसत  
छी...है घटर, अहाँ तऽ एतहि रहब...भाई के बेसी दुर्गपाठ जुनि  
सुनेबनि । (प्रस्थान)

घूटर—दुर्गा...दुर्गा...कने पढ़ि लिखि को गेल ई परफेक्टर अपना के सभसे  
काबिन पुस्त अछि ।

(रसिमयाक प्रवेश)

रसिमया—साहेब—अहाँ के मेम साहेब बजबैत छवि ।

(घूटर मोतर जाइत छवि आ' फेर कनेकाल मे आपस अवैत छवि ।)

घूटर—मास्टर...उठहू...बोआसीन कहैत छपुम जे पाछुबला घर मे अपन  
बोफिया बिस्तर लगैबाक लेल । उठहू...रे मेना...केहेन मिसम  
मेड...मऽ कऽ सुति रहल तुरहे... (वेर सँ ठेलैत) रे मेना...मेना...

मास्टर—वेर सँ नहि घूटर भाई...वेर सँ नहि । ओकरा फूकनाक भेटा जुनि  
बूझू...ओ हमर भेटा सँ कम मजि...मेना...मेना...

मेना—(हड़बड़ाइत उठैत) जी...ओ मास्टर साहेब

मास्टर—उठ बल...।

मेना—कउऽ मास्टर साहेब ?

मास्टर—बल मे पाछुबला घर मे हमरा पहुँचा दे । तकरा बाद तौ मुँह हाथ  
धो कऽ बोआसीन सँ जलख सऽ कऽ छा लिहें... (मेना मास्टर के सहारा  
वऽ उठबैत अछि घूटर दुर्गा-दुर्गा करैत छवि कोनो सहारा नहि बँत छवि)

घूटर—रसिमया, तौ मास्टर के पाछु बला घर मे सऽ कऽ चल...हम अबैत छी ।  
(मास्टर, मेना आ' रसिमयाक प्रस्थान) । रोताक प्रवेश)

रोता—घूटर भाई...आब की करी हम ?

घूटर—बोआसीन अहाँ निश्चित ने रहू । नरेश्वर के आवऽ दियोनि, ओ डाक्टर,  
साबरत सँ देखैनि...तकरा बाद ने किछु...

रोता—हँ...रह । अहाँ जे महि कहितहुँ तऽ बाद हम हुनका अही घर मे राखि

लितियैनि...बाप रे तखन तऽ बड़ा अनय होइत...हमरा राग  
टी० बी० भऽ जाइत ।

घूटर—दुर्गा-दुर्गा...बोआसीन...मास्टरक थारी-बाटी गिलास सभ अलग  
कऽ दियोनि ।

रोता—घटर भाई...परन्च नरेश्वर के तऽ तामस भऽ जेतैनि ।

घूटर—अरे अहाँ निश्चित ने रहू । हम सब सम्भारि देब । हे बोआसीन...  
एमहर सुनु...अहाँ के कहि दैत छी...मास्टर के टी० बी० ती० बी०  
नहि छैक, पोद्दार डाक्टर हमरा गामे मे कहने छैन जे मास्टर के  
फँसर छै ।

रोता—फँसर !

घूटर—हँ, ताहि दुआरे ओ बन्धुकास्त परफेक्टर के जोर दऽ कऽ एतऽ पठबैलकीनि  
अछि । परफेक्टर के सेहो मुसल छै, परन्च, मास्टर के टी० बिये कहने  
छै पोद्दार डाक्टर...

रोता—बाप रे...हमर तऽ करमे जलल अछि...कतऽ पापा बियाह कऽ दैलनि...  
अखन बियाह भेना सालो नहि पुरल अछि आ' हँ फँसर बला सभक  
फेरा मे पढ़ि गेलहुँ...हम आब एतऽ नहि-रहब । आइये पापा लग  
चलि जँब ।

घूटर—दुर्गा-दुर्गा...बोआसीन एतेक अगुनाइ जुनि । नरेश्वर के आवि आब  
दियोनि...तखन कोनो फँसला करब । जाउ भोजन भातक ओरियाकोन  
करबाउ मास्टर आ' ओकरा संग एक्का देलहा जे छै मेना, लकरी ने  
भोजन बनबऽ पड़त आइ सँ ।...हम कने मास्टर के देखने अबैत छियै,  
दुर्गा...दुर्गा (प्रस्थान)

रोता—(किछु सोचि कऽ फोन लगबऽ लगैत छवि)

हेलो...हेलो...हँ पापा...हँ...अहाँ जल्दी एतऽ आउ...ने आउ तखन  
बढ़ब...कहिया ?...परसू...अथक्ष

(प्रकाश बन्न होइत अछि)

\* (सर्भेन्ट रुमक दृश्य । एकटा छाट १२ मास्टर परल छथि ।

गेना पर जाति रहल छनि । रक्षिमां ठाढ़ अछि)

घूटर — (प्रवेशक संघ) की ही मास्टर, "जगह पसिन्त छह कि नै ?

मास्टर — घुटर भाई, ई लऽ ...

**घृतर** —हैं ही मास्टर हैं तब नोकर-चाकर के रहस्यता घर छे। बोझिल के कोन जान छिन से नहि जानि। लाख बुझिलियनि जे मास्टर के कतेक दुःख हेलनि तब ओ कहत लगली जे अर्थ घर मे कोना रहियनि। दो-  
 नो छनि बार नहि जानि कोन-कोन बिमारी छनि। कसर होइत छनि बड़ी हुनको सभके जे पटि जाइत । "हमर तब केज फाटल जा रहस्य बलि" दुर्गा "दुर्गा" (प्रधान)

मास्टर — ओहो... घुटर भाई... पता नहि आब कतेक दिन रहव एडि संसार मे...  
 एबाक एक्कोरतो इच्छा नहि छल । नरेक मौनी आ ई चम्बकात भाई  
 ठैलठालि कऽ जबरदस्ती पहुँचा देलनि " बाह... बाह... "

(खूब जोर से पैट में बर्त उठेंत छनि)

गेता " " गेता " " पानि " " पानि

गेना — मास्टर साहेब\*\*\* मास्टर साहेब

(ता घरि रहियो भोतर सँ जल आनि कऽ दैत छनि । मास्टर जन पिबैत छथि । कने काल बाद शान्स होइत छथि)

मास्टर —मेना "रो ई ददं" ई ददं प्राण लऽ कऽ छोड़त"

मेना — मास्टर साहेब... बही! आराम करू... हम माय दबा दैत छी (माथ दबाबू संगैत अछि)

एदिमयी — तोहर नाम केना छी ?

सेना — ७५० ।

रश्मियाँ — नाब तों सभ एउत रहबो ?.....। हम एहि घर मे रहै छी....। केहेन छे भेम खाइब जे भाई के भौकर बला घर मे ठेल देलकै यै...। (कहैत प्रस्थान)

मेनां — हम मास्टर साहेब के एतऽ सहि रहऽ देखिन । मास्टर साहेब साहेब ।

मास्टर —

शेता — चतु ए८५ सें। शम चतु

मेना — चलो एतइ से। बाँस चले।  
 माह्वर — मेना—मेना तोहीं हमर सब किछु हैं। मेना, भागवान बाह्वर भाग बाग।  
 कामना पूरा करयुन।

मेना — मास्टर साहेब... हम अर्द्धांगी प्रभु तिरा काश भगवान के चरित्र अर्द्धांगी  
समि मे नीके भड गैब ।

मास्टर — गेता "आवि गेलहुं" तऽ पू आदि विन कोकणा "तरे आदि न दत हांगि,  
तऽ भेट भऽ जायत । (प्रकाश बग्ग)

बारहम दृश्य

(सर्वोत्तम से प्रकाश, रसिधर्मा सम नरेन्द्रक प्रयेरा। रसिधर्मा हाथ से  
दुशारा कऽ देखवैत छनि। गेना भास्वरक पर दबवैत रहैत छनि। नरेन्द्र बड़ि  
कऽ पर वकड़ि लैत छनि।)

नरेन्द्र —भाई, ...भाई हमरा माफ कऽ दिय भाइ... ई की हाल भऽ गेल सहाँक भाई...?

मास्टर, — नरेन्द्र<sup>११</sup> नरेन्द्र<sup>१२</sup>

नरेश्वर —भाई! अहाँ के एहिदाम के रखनेलक ? हम ओकरा कहियो सभा महि कइ सकैत छी । भाई ...

मास्टर - नरेंद्र होश में आउ.....हम.....हम तऽ कष्ट में छीहें.....अहाँ एना करब तऽ हमरा बड़ दुःख हैत ।

नरेन्द्र — भाई... जहाँ एतेक बीमार छी... एकोटा पत्र नहि...

माहेश्वर — नरे... हय आ' अहीरा भीनी लड कम सँ कम बलठा पत्र लेने होयब...  
अहीरा जयाव नहि भेटस...





नरेन्द्र — हे भगवान ! ई की सुनत छी । हमर देवता सन भाई के कंसर... ।  
(रोता सँ) अहाँ चाण्डालिन छी... हमर भाईके एहि स्थितिक लेल  
अहाँ जिम्मेवार छी... कहूँ हमर भाईक चिट्ठी सभ हमरा किएक नहि  
देलहुँ... बाजू—बलैत किएक नहि छी... ?

(घूटर चुपचाप सतक जाइत छथि)

रोता — वो... टठी... को... न... बि... टठी ?

नरेन्द्र — भूठ नहि बाजू... रसिमयी सँ पता लागि 'गेल अछि' बराबर चिट्ठी  
अबैत छन परन्तु, आइ धरि... आइ धरि हमरा हाथ मे एकोटा चिट्ठी  
नहि भेटल... किएक... बाजू... कस... अछि चिट्ठी सभ ?

रोता — चिट्ठी सभ के हम फाड़ि देली—

नरेन्द्र — हमर भाईक जिनगी आ मृत्युक सबाल छल आ' अहाँ चिट्ठी सभके  
फाड़ि देलहुँ—

रोता — हूँ... जिनगी आ मृत्यु... अहाँक भाई जिनगी या मरवि ताहि सँ हमरा  
की ?

नरेन्द्र — रोता... (कतिस गालवर धावर भारन छथि)

रोता — अहाँ... अहाँ हमरा धावर मारलहुँ... अहाँक ई मर्यादा के हमरा धावर  
मारब (बूझ जोर सँ कानस लगैत छथि । नरेन्द्र निकलि कऽ चलि  
जाइत छथि । प्रकाश धीरे-धीरे बन्द होइत अछि ।)

### चौदहम दृश्य

प्रकाश सफेद कम मे । नरेन्द्र अबैत छथि आ' आवि कऽ मास्टर लया बैसि  
रहेत छथि । ओठ घूटर पहिने सँ रहैत छथि

नरेन्द्र — (खम्बरकान्त सँ) भाई कने... एमहर सुनू सऽ... भाई कि ई कँसर... ?

खम्बरकान्त — नरेन्द्र... ऐके हठोसाहित जुनि होउ... हूँ पोहूँ डाक्टर के सत प्रति-  
शत शंका छनि जे ई कँसर बीक । तँ हम मास्टर के जबरनली उठा कऽ  
सऽ अनिवारि । अहाँक एक्सरेस मे हम कोनो डाक्टर सँ शिखा सकैत  
रहियनि परन्तु, हम अहाँक प्रतीक्षा करब उचित नसल ।

( रसिमयीक हाकिम प्रवेश )

रसिमयी — ताहेब... साहेब... मेमसाहेब... मेमसाहेब

नरेन्द्र — अखन हमरा फुलैत नहि अछि । जो पहि दिनुन जे हम भाई के सऽ  
डाक्टर के ओतऽ जा रहल छी ।

रसिमयी — ताहेब... मेमसाहेब शीमी मे सँ कौनहन दवाई सा लेलखिन... आ'...  
आ' एकदम दर्द सँ छऽपटा रहल छथिन... रहैत छथिन हम मरि जैब  
हम मरि जैब ।

नरेन्द्र — की ?

मास्टर — नरेन्द्र जस्टी जाउ... पहिने बोआशीन के देखियौन (नरेन्द्र आगो आगो  
आ पाछो सऽ खम्बरकान्त आ घूटर सेहो जाइत छथि)

(प्रकाश बन्द)

## पन्द्रहम दृश्य

(समंन्त कम मे प्रकाश, चन्द्रकान्त सेहो बैंगल ध्वनि)

चन्द्रकान्त—भाई बूढ़ तऽ आइ बोआसीन बचि गेली आ' प्रतिष्ठा सेहो बचि गेल ।  
कहू तऽ बोआसीन ई की कैलनि । पति-पत्नी मे खनका खनक बातऽ  
न होइत छै जे बोआसीन छोट-छीन बात तऽ कऽ सोखे अहू खात कऽ  
आत्महत्या करऽ गेलीह । गनीमत छल जे ओ मच्छर मारऽ बला बलाई  
रहे सेहो पुरान, बेसी स्ट्रॉग नहि । नहि तऽ आइ जुगुम भऽ जाइत ।  
आ' ई नरेन्द्र के सेहो नेनमति नहि गेलनि अछि । मारि' पीह' छी'...  
छी'...छी'...

मास्टर—भाई' भाई' भाई बड़ दर्द करैत अछि आइ गेना' गेना' गेना' गेना' पानि  
पियो' (गेना' पानि आनि क ईत छन्हि) आहू' भाई' भाई' एहि सभ  
फसादक जड़ि हूष छी' हमरा' हमरा' आइये गाम पहुँचा दिय'

चन्द्रकान्त—भाई' अहाँक स्थिति ई नहि अछि जे अहाँ गाम जाइ'

मास्टर—नहि भाई' नहि आज हम अहाँक गप्प नहि सुनब । आय जे हैत से  
गामे मे हैत—

घुटर—(प्रवेशक संग) ठीके हो मास्टर...हमहूँ आब एक क्षण नहि रहि सकैत  
छी'...दुर्गा'...दुर्गा' एहने...एहने काँड सभ होइत अछि'

चन्द्रकान्त—काँड' हूँ' मास्टर एहि सभ फसादक जड़ि अहाँ अपनाके' बुझैत छी,  
परन्तु थास्तब मे फसादक जड़ि छवि'...यह घुटर'

घुटर—दुर्गा' दुर्गा' ई को कहैत छी यी परफेक्टर ?

चन्द्रकान्त—ठीक कहैत छी'...पहिले तऽ मास्टर के पोटी पाटि कऽ हूँ जिनियर  
साहू बक ओतऽ बिबाह करबोनाई । झूठ मूठ सोसे प्रचार जे एक लाख  
टाका मास्टर लेलनि भाईक बिबाह मे । 'आ' साहू सँ अहाँक पेट नहि  
भरल तऽ एहिठाम बोआसीन के बुझि देनाहूँ'

घुटर—झूठ' एकदम झूठ' अहाँक सरगानाज हो जे हमरा पर एहन कलंक'

चन्द्रकान्त—सत्यानाश तऽ सोसे गामक कऽ रहल छिये अहाँ । ठीके अहाँके लोक  
लो'गिया मिरबाइ कहैत अछि' बापरे एहन कड़ जे सोसे करेबा तक  
के बेध दिए'

घुटर—देखू परफेक्टर' अहाँ हूँ सँ आया' बड़ि रहल छी । मास्टर अपन मोन  
सँ भारीक बिबाह ठीक कैलनि पूँच आवबो कतऽ । आब ओकर फल  
भुगत रहल छथि तऽ हमर कोन दोष' ?

चन्द्रकान्त—हूँ' दोष तऽ मास्टरक अवश्य छनि जे ओ स्टेटस ताकय खगलाहूँ'  
इ नहि बुझलनि जे स्टेटस बलाक बेटी हिनकर दूती मरैया मे कोना  
कऽ रहलनि' आइ कालि' दहेजक एकटा दहो रूप अछि जे कतेको घर  
के बर्बाद कऽ दैत अछि' परन्तु, घुटर अहाँक प्रसिधा बिलक्षण  
अछि'

मास्टर—भाई बूढ़ भऽ जाइ'

चन्द्रकान्त—नहि भाई' आइ बहुत दिन सँ हिनकर चालि हम गाम सँ एतऽ घरि  
देखैत चलि आबि रहल छी' ओहि दिन अजान रहिमयाँ सँ पता सापस  
जे यह घुटर बोआसीन के समझा बुझा कऽ अहाँ के एहि समंन्त बचाटर  
मे रखबेलैनि तऽ हमर तऽ देह जरि गेल' मोन तऽ होइत अछि हिनका  
तत्त मारि मारी जे'

घुटर—परफेक्टर' तोरो देख लेबो' बड़ जे काबिल'

चन्द्रकान्त—खबरदार जे फेर आयू बबलौ' अरे अहाँ हमरा की देखब? गामक  
कतेको घर मे अहाँ आनि खगोने छी' हमरो घर बर्बाद करऽ चाहब  
से नहि हैत' परम्भ, आब जे अहाँ एको शब्द बबलौ तऽ हम अहाँक  
टांग तोड़ि देख भायू' भायू एतऽ से'

(घुटर के धक्का बऽ कऽ बाहर करैत छथि)

मास्टर—भाई माहक मे'

चन्द्रकान्त—किछु माहक नहि' ई एहि पाकक छथि । भाई नरेन्द्र के आबऽ बियोन  
'हम अहाँके एतऽ सँ लऽ चलब' नसिग होम मे राखब' यह नै हैत  
जे एकाध बिगहा गामक जमीन बेचऽ पड़त' बेचब' मितक लेल तऽ  
लोक की की नजि करैत अछि'

मास्टर—भाई' भाई

(पेट मे दर्द उठि जाइत छनि' चन्द्रकान्त आ गेना सगहरैत छथिन ।  
प्रकाश बन्द होइत अछि)

५१

५२

५३

५४

५५

५६

५७

५८

५९

६०

६१

६२

६३

६४

६५

६६

६७

६८

६९

७०

७१

७२

७३

७४

७५

७६

७७

७८

७९

८०

८१

८२

८३

## सोलहम दृश्य

(ब्राह्मण रुक्मक पुत्र्य घुट्टर अपन कपड़ा लता सरिया रहल छथि । जखवाक सपकप छनि विवाकर बाबुक रीत) "रीता करैत प्रवेश घुट्टर के देखितहि"

विवाकर—आ-हा-हा-हा नमस्कार—नमस्कार घुट्टर बाबू बहुत दिन पर भेंट भेल ।  
अरे अपने ह झोड़ा झपटा

घुट्टर—बहुत ७५ गेल "बहुत ७५ गेल" आवहम जाकोर बैजली बदलित  
नहि कऽ सकैत छी "हमरा आय दिय" (जिवाक सपकप मे)

विवाकर—अरे "एग कोना चलि जायब । हम एलो" आ' अहाँ चलि जायब"  
के केसक अहाँक बैजली ? की रीता सँ कोनो ?

घुट्टर—दुर्गा "दुर्गा ओ जेवारी तऽ साक्षात् दुर्गा छथि ।" कतेक धानिर  
केलिन परन्ध

विवाकर—कतऽ छथि रीता ? रीता...रीता

घुट्टर—हनजीयर साहेब "एहिठाम भोर अनर्थ भेल अछि । बीआसीन जहर  
जा लेलनि

विवाकर—की ? की कहैत छी ? जहर...?

घुट्टर—ओ ! ओ तऽ बूझ जे एग एतऽ रही जे सभ बचि गेल "डाक्टर भोर  
सँ एतऽ रहि" आव सुतय बला दूह दऽ कऽ गेल छथि "बीआसीन  
ओहि घर मे सुतल छथि"

(विवाकर ओह भाई गाँव कहैत मोतर जाइत छथि । घुट्टर दुर्गा—दुर्गा  
करैत रहैत छथि । कतेकाल मे विवाकर मोतर सँ अबैत छथि)

विवाकर—घुट्टर बाबू "हमरा सच-सच कहूँ ह कोना भेल ?

घुट्टर—आब जाय दिओ हनजीयर साहेब । भगवान के धन्यवाद दियोनि जे  
बेटी बचि गेलीह

विवाकर—घुट्टर बाबू हमरा सच सच कहूँ ह कोना भेल ? के एहि लेल जिम्मेदार  
अछि "नरैन्द्र कतऽ छथि ? अहाँ बजैत किएक नहि छी ?

५६ १

घुट्टर—को बाबू ? नरैन्द्र तामसे बीआसीन के हूँ बारि पापर सगा देलनि ।

बीआसीन बदलित नहि कऽ सकीह आ' मन्थर भारी बसा दवाई

विवाकर—नरैन्द्र के ई हिम्मत ! ओ हमर कूल सन बच्ची के मारलनि ? कतऽ  
छथि नरैन्द्र ?

घुट्टर—छीयँ राखू "हनजीयर साहेब नरैन्द्र के कोन बोध" पता नहि मास्टर  
की सभ सिखा वड़ा देल केनि

विवाकर—मास्टर "घुट्टर बाबू" अहाँ पहिली धुनि बूझाउ । हमर देह मे आगि  
लागल अछि "पूरा गप्प कहूँ"

घुट्टर—सँह तऽ कहि रहल छी "नरैन्द्रक परोक्ष मे मास्टर एतऽ बारिमे दिन  
जायल "बीआसीन ओकर रहबाक व्यवस्था पाछुबला घर मे करबा-  
देखलिय" ताहि लेल

विवाकर—ओ "तऽ मास्टर ओतऽ छथि" ओ की बूझैत छथि अपना के ? (बर्बत  
प्रत्यन । पाछु पाछु घुट्टर सेहो जाइत छथि । प्रकाश बनि)

## सत्रहम दृश्य

(सभैत स्यादर । मास्टर पड़ल छथि । चन्द्रकान्त । गेना बिछाओन  
समेत कऽ बान्हि रहल अछि । विवाकर बाबूक हृष्टायल कुफियायल  
प्रवेश)

विवाकर—मास्टर, अहाँ के हम नीक लोक बुझैत रही, परन्ध अहाँ अपन स्वार्थक  
लेल हमर बेटीक घर उन्नाड़ पर लागि गेलहुँ "छी" "छी" "छी"

मास्टर—विवाकर बाबू

विवाकर—छबर सार "अपन गन्दा जुवान सँ हमर नाम नहि लिय" "आइ जँ हमर  
बेटी के किछु बऽ गेल रहैत तऽ हम अहाँ के गोली मारि दिहूँ" । आब  
नीक अही मे अछि जे अहाँ अपन रस्ता पकड़ू आ' भविष्य मे फेर  
कहियो हमर बेटीक घर दिख जुनि ताकू

घुट्टर—दुर्गा "दुर्गा" विवाकर बाबू ? एतेक तामस ठीक नहि । मास्टर  
अपनेक कुटुम्ब अछि

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

दिवाकर—ही कुटुम्ब वौ घूटर बाबू ? कुटुम्बक इएह काज जे हमर बेटीक घर उजाड़य ?

बन्धकांत—दिवाकर बाबू—बहुत काल से हम सुनि रहल छी—अहाँ पैंष लोक भऽ सकैत छी परन्ध बुद्धि भिन्न स्तरक अछि—एकटा बिमार व्यक्ति से कोना गप कैल जात छैक सेहो ज्ञान नहि अछि—

दिवाकर—अहाँ हमरा ज्ञान सिखायब ? हम अहाँके नहि जनैत छी—परन्ध अहाँ जे क्यों होइ, हमर बेटीक घर से सुरत निकलि जाइ—अन्यथा

मास्टर—(उठिकऽ ठाड़ होइत) भाई चल्—आब बहुत भऽ गेल—दिवाकर बाबू हमरा चलत जुनि बूल्—अपनेके हम बहुत आदर करैत छी—आ तहिना बीआसीन आ नरेश्वर से स्नेह अछि—

दिवाकर—अरे जात जात बहुत स्नेह देखलौं। सोते इलाका मे प्रचार केने छी—बहुत मीक मास्टर—बहुत दयावान—हूँ—हमर बेटीक लेल तऽ हेवान—

मास्टर—दिवाकर बाबू—अहाँ हृद से आगो बचल जा रहल छी—आह—आह (वर्दे उठि जाइत छनि)

बन्धकांत—भाई—पढ़ि रहूँ—

मास्टर—नहि भाई—आब की पढ़ऽब—चलू। अहि ठाम आब एक-एक क्षण पढ़ि बुझाइत अछि—

दिवाकर—हूँ—हूँ—जाव। मुदा कहि दैत छी—भविष्य मे फेर कहियो हमर बेटीक घर दिस नहि तकब—

बन्धकांत—दिवाकर बाबू अहाँ जे कऽ रहल छी तकर फल एक दिन अहाँ भोगब—अहाँ से बेसी अहाँक बेटी भोगतौ—परन्ध, एकटा बात कान खोलि कऽ सुनि लिय—अहि घूटर से सावधान रहब। दिनका गामक लोक लौगिया मिरबाई कहैत छनि। लौगिया मिरबाई जेकरा खेबाक इच्छा तऽ सभके होइत छैक—परन्ध खेलाक बाद उहेन कड़ू सगैत छैक जे लोक के कमा दैत छै—

घूटर—दिवाकर बाबू—देखि लिय—ई रोफेसर अहाँक सोझा मे हमर केहेन बैजती कऽ रहल अछि—हमर नूनू जे एतऽ रहित्यि तऽ हिनकर टांग हाथ टोढ़ि कऽ आ दैतयि—(बजैत प्रस्थान)

बिबाकर—जात होइ—घूटर बाबू कने जात होइ—(बन्धकांत से) अहाँ हमरा कि लोक के चिन्हायब ? पहिने अपना के चिन्ह—के लौगिया मिरबाई अछि से हमनू बुझैत छी—आ हे हमरा कि हमर बेटी के एतेक कमजोर जुनि बूल्—

बन्धकांत—हूँ ठोक कहैत छी—अहाँक देटी कमजोर किएक रहैती—ओहो तऽ लौगिया मिरबाई से कम नहि छयि—

दिवाकर—बुजान समझारि कऽ बाबू—नहि तऽ आइ एतऽ—

बन्धकांत—दिवाकर बाबू हमर गप अपने के अधलाह लागि रहल अछि—पान्च बाद मे बुझबै जे हमर गप्पक की अर्थ।—ई घूटर सनक व्यक्ति जे प्रायः प्रत्येक गपन मे रहैत छयि—करो मीक नहि देखि सकैत छयि—आइ ई अहाँक श्रिय पात छयि परन्ध, काहि ई अहाँक जड़ि खोइऽ लगतार। एकटा बात आबोर—आने सनक लो कोइब पाइ बला लोक अपन पाइक जोर पर जेहेन लड़का बाहेत छी उठा अनैत छी—आ ओ लड़का आ जे संस्कारो रहल तऽ हु तरहक स्ट्रेन्जरक बीच पारि जिनगी मिलाइत रहैत अछि—ओकर वैवाहिक जीवन सुखमय नहि रहैत छैक। आमा अछी अहाँ अपन दोसर बेटीक विवाह मे जहि बातक ध्यान राखब—

मास्टर—भाई—जात रहूँ—बहुतक कोन आवश्यकता—चलू—

(नरेश्वरक प्रवेश)

नरेश्वर—भाई चल्—टैन्सी लऽ मतलह—डाक्टर से समय (ससुर पर दू छिट पड़ैत छनि) ओह अपने एतऽ—

बिबाकर—हूँ हय एतऽ—हमरा देखि ह्दास किएक उड़ि गेल—हमरा देखि कऽ अहाँ हुनू भाईक प्लान गढ़बड़ा गेल की ?

नरेश्वर—प्लान—केहेन प्लान ?

बिबाकर—बाह केहेन जनबान बनि रहल छी ? हुनू भाइ मिलि कऽ हमर बेटीक प्राण सेवापर लागल छी आ कहैत छी कोन प्लान ?

नरेश्वर—दिवाकर बाबू—होश मे बात करू। हमर बेवता सनभाई पर एहन कलंक—

दिवाक

मास्टर—(डर्टन) नरेन्द्र सभ शिक्षा बोर्डि कऽ पीन्नि भेलहु छी: छी: छी: ससुर पिता सुन्य होइत छथि .... अहि सरहक व्यवहारक अहाँ से आश नहि छल....

बन्धका

नरेन्द्र—भाई हमरा अमा कऽ दिवऽ

मास्टर—अमा हमरा से नहि... अपन ससुर से मांगू .... (बाइबास से) भाई बसू...गेना उठा समान...

दिवाक

नरेन्द्र—भाई ई कि ? अहाँके डाक्टर ओलऽ लऽ जेबाक केन हम टैंक्सी अमने छी

मास्टर—ओहि टैंक्सी से हय स्टेशन बनि जायद....

मास्टर

नरेन्द्र—नहि भाई नहि ई नहि भऽ सकैत अछि....हम अहाँके एहि हाल मे नहि जाय देब....(पर एककि लेति छथि)

दिवाक

मास्टर—नरेन्द्र होश मे आउ....हमरा बचबाक अछि....शाम मे अहाँक भोजी प्रतीक्षा करैत हवी....

मास्टर

नरेन्द्र—नहि भाई महि...

मास्टर—अहाँके अहाँक भोजीक सप्लत । हमरा जुनि रोकी....

बन्धका

नरेन्द्र—भाई !

मास्टर

मास्टर—हूँ....अहाँ वाउ बौआसीन के देखियोन....तुनका हमरा अएला से बहुत कट भऽ गेलनि...। गेना....गेना....कते हमरा सहारा दे (गेनक कऽही पर हाथ राखि बहुबाक उपक्रम)

दिवाक

नरेन्द्र—(मास्टर के पकड़ैत) भाई हय अहाँके पहुँचा दैत छी....

बन्धका

मास्टर—नहि नरेन्द्र अहाँ वाउ आब लऽ हएहु गेना हमर सहारा कीक....भाइ बसू.... (गेनाक कऽहीक सहारा लेत मास्टर बा' पाछ पाछ चन्द्रकान्तिक प्रस्थान करवाक मुद्रा । नरेन्द्र खाट पर बैसि कानय लेबैत छथि....

सभ पात्र स्थिर.... प्रकाश बन्द होइत अछि

समाप्त